नरक विजय

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

पात्र परिचय

बाहुबली रमेश उमेर करीब 40-45 बरख, नीक लोक छल, पढ़ाकू विद्यार्थी, इंजीनियर भेल मुदा नियतिक कुचक्र सँ अपराध क्षेत्र मे आबि गेल, कतेको हत्या, फिरौती, बलात्कार आदिक मोकदमा ओकरा पर चललैक मुदा साक्ष्यक अभाव मे सब बेर छूटि गेल।

बाहुबली सुरेश रमेशक संगी, ओहने उमेरक, ओहो पढ़बा मे नीक छल, एम.एस-सी. केलक, मुदा रमेशे जकाँ फँसि गेल। रमेशक बिजनेस पार्टनर आ सब तरहक अपराध करबा मे ओकरा सँ एक डेग आगुए।

वैज्ञानिक अनुपम अमित नामक वैज्ञानिक, उमेर 50-55 बरख, यथा नाम तथा अनुपम काज। कम्प्यूटर तथा कृत्रिम बुद्धि (artificial intelligence) विशेषज्ञ। यंत्र मानव (robots) आ प्रतिरूप मानव निर्माणक क्षेत्र मे नव नव आविष्कार लेल विश्व मे हिनक जोड़ नहि। हिनक बनाओल विधि सँ कम खर्चा मे बहुतो लोक साइबोर्ग (cyborg) (*) अवस्था मे अपन प्रतिरूप बना कए अपना कें सुरक्षित कऽ लेलक आ अमर भऽ गेल।

पौराणिक पात्र ब्रह्मा, विष्णु, महेश, नारद, चित्रगुप्त, यमराज

यमदूत एक, यमदूत दू,

***

(*) साइबोर्ग बुझबा लेल देखू हमर पुस्तक 'विज्ञानक बतकही' मे 'अमरत्व' लेख अथवा 'मिथिला दर्शन' के मार्च 2012 अंक।

अंक 1 दृश्य 1

पर्दा उठबा सँ पहिने नेपथ्य मे घोषणा होइत अछि (दू व्यक्तिक स्वर) --

एक — आजुक टटका खबरि सुनू। दुर्दान्त बाहुबली रमेश आ सुरेश अपन पचास टा राजनीतिक संरक्षक लोकनि कें जलसा मे बजाए बड़ी राति तक नाच गान भेलाक बाद बेहोसीक अवस्था मे दनादन हत्या कऽ देलनि। तकर बाद प्रसिद्ध वैज्ञानिक अनुपम अमितक अपहरण सेहो केलनि।

दू — पूरा राज्य त्रस्त अछि, सत्ता शून्य अछि, करीब अस्सी प्रतिशत मंत्री आ विरोधी नेता सब यमलोक पहुँचि गेल छथि। एहि आतंकक अन्त कहिया होएत ? कहिया दुर्गा अवतरित होएतीह एहि शुम्भ निशुम्भ कें वध करबा लेल ?

पर्दा उठैत अछि। मंच पर व्यवस्था सँ बुझना जाइत अछि जे शहर सँ दूर हटि कए जंगल मे एकटा निर्जन स्थान मे घर। घर मे एक कोन मे टेबुल पर कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक यंत्र, किछु Do-It-Yourself (DIY) किट, किछु तार, सोल्जरिंग आयरन, अन्य उपकरण आदि अस्त व्यस्त दशा मे राखल। दोसर कोन मे टेबुल पर अनेको शास्त्र पुराणक मोट मोट पोथी सब सजाओल। मंचक बीच मे कने आगू दिश तीनटा कुर्सी राखल। कुर्सीक सामने छोट टेबुल पर जलक बोतल आ गिलास। बीच बीच मे नेपथ्य मे जंगली जानवर सबके शब्द सुनाइ पड़ैत अछि।

वैज्ञानिक अनुपम स्लीपिंग सूट पहिरने छथि। चेहरा पर ओंघाएल आ थाकल हेबाक भाव। हुनका बन्हने रमेश आ सुरेशक प्रवेश। दूनूक हाथ मे पिस्तौल छैक। प्रकाश वैज्ञानिकक चेहरा पर फोकस रहैत अछि आ जेना जेना ओ मंच पर आगू अबैत छथि, तेना तेना हुनका संग चलैत अछि। मंचक बीच पहुँचला पर पूरा मंच प्रकाशित होइत अछि। रमेश हुनकर बन्हन खोलैत अछि। सुरेश हुनका एक गिलास जल पीबै लेल दैत छनि।)

वैज्ञानिक — ***(जल पीबि, घबराएल)*** हमरा किएक अपहरण केलहुँ ?

सुरेश — ***(कुर्सी दिस इसारा करैत)*** पहिने आसन ग्रहण कएल जाओ सर। ***(एक एक कए तीनू गोटे बैसैत छथि, दूनू बाहुबली अपन पिस्तौल टेबुल पर रखैत छथि।)***

रमेश — घबरेबाक कोनो बात नहि सर, अपने आराम सँ बैसियौ। अहाँ सँ ने कोनो फिरौती लेब आ ने कोनो तरहक कष्ट देब। अहाँ तऽ हमरा सबहक पूज्य छी आ देशक गौरव। अहाँक सुरक्षा हमरो सब लेल बहुत जरूरी अछि। किछु गप सप केलाक बाद अहाँ कें एखनहि आपस पहुँचा देब।

नेपथ्य मे जंगली जानवर सबके शब्द सुनाइ पड़ैत अछि। वैज्ञानिक अकानैत छथि।

वैज्ञानिक — हम सब जंगल मे छी की ?

सुरेश — जी सर, एतए एकान्त मे अहाँ कें लऽ अनलहुँ मात्र अपन प्रोजेक्ट बुझबै लेल। हमरा सबहक प्रसिद्धिए तेहन भऽ गेल अछि जे अहाँक ऑफिस मे जाकए विजिटिंग कार्ड देखा कए गप नहि ने कऽ सकैत छलहुँ। तें अपहरणक नाटक करए पड़ल।

वैज्ञानिक *(चेहरा पर शांत भाव अनैत)* ओ !! जल्दी अपन योजना कहल जाओ।

रमेश देखियौ सर, एतेक दिनक अपराध यात्रा मे हम सब बहुत पाप केलहुँ। एतेक तरहक पाप जकर वर्णन शास्त्र पुराण मे भेटबो नहि करत।

सुरेश हम सब एहि बीच शास्त्र पुराण सबके अध्ययन सेहो केलहुँ, मृत्यु उपरान्त स्वर्ग नरक भोगक जानकारी सेहो लेलहुँ। देखियौ ओ पोथी सब *(कोन दिस इंगित करैत छथि)*

वैज्ञानिक *(कने मुस्किआइत)* अच्छा !

रमेश आइ हमरा दूनूक आत्मा कें अपूर्व शान्ति भेटि रहल अछि जे ओहि पचास टा पपियाहा दुष्टात्मा सब कें यमलोक पहुँचा देलियैक। एही दुष्ट राजनेता लोकनिक कारण हम सब अपराधक संसार मे घुसिया गेलहुँ। हमरा सबके आपराधिक जीवन एतहि शेष होइत अछि।

सुरेश आब हम सब एक विशेष अभियान पर जाए चाहैत छी। एहि लेल हम सब अपना संग किछु चीज लऽ जाए चाहैत छी जे एतुका वैज्ञानिक आविष्कारक अभिनव नमूना होइक। ओही लेल अहाँक मदति चाही। हमर ई लिस्ट देखि लेल जाओ सर। *(एकटा कागतक टुकड़ी हुनका दैत छथि)*

वैज्ञानिक *(लिस्टक अध्ययन करैत)* समय आ खर्च दूनू बेस लागत।

रमेश ओकर चिन्ता नहि। एकटा आर अनुरोध अछि, एकरा देखियौ सर *(दोसर कागत बढ़बैत छथि)*

वैज्ञानिक मुदा अहाँ सब बुतें कोना पार लागत ?

सुरेश हम फीजिक्स मे एम.एस-सी. छी आ हमर सहयोगी इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर छथि। ई तऽ नियतिक दुश्चक्र जे हम दूनू अपराध जगत मे आबि गेलहुँ । नहि तऽ कोन ठेकान आइ अहींक प्रयोगशाला मे सहायक भेल काज करैत रहितहुँ।

रमेश समय निकालि हम सब अहाँक टीम द्वारा कएल जा रहल वैज्ञानिक अनुसंधान आ आविष्कारक जानकारी सेहो लैत रहलहुँ। इलेक्ट्रॉनिक्स आ कम्प्यूटर सम्बन्धी लूरि बिसरी नहि ताहि लेल किछु किछु करैत रहलियैक *(टेबुल दिस इंगित करैत छथि)*

वैज्ञानिक ठीक छैक, हम अहाँ सबहक अभियान मे मदति करबाक सक्क भरि कोशिश करब। आर किछु ?

सुरेश नहि, खाली अहाँ सँ फेर कोना सम्पर्क करी से बता दिअऽ।

वैज्ञानिक ई लिअऽ हमर विशेष कोड। *(एकटा कागत पर किछु लीखि कए दैत छथि)* एहि द्वारा ब्रह्मांडक कोनो जगह सँ स्मार्टफोन सँ एकरा डायल कऽ सकैत छिऐक मुदा ध्यान राखब ई अनका हाथ नहि पड़ैक कारण ई गुप्त कोड छिऐक, एहि पर फोन टैपिंग लागू नहि छैक। अहाँ दूनू हमरा फोटो लेबऽ दिअऽ, जे हम परिचय लेल अपना सिस्टम मे देबैक। परिचय नहि भेटला पर सिस्टम कॉल स्वीकारे नहि करत।

रमेश कोनो बात नहि, फोटो लऽ लिअऽ मुदा कने एडिटिंग कऽ देबैक सर, कारण बुझिए गेल हेबैक। ***(हँसैत छथि, वैज्ञानिक हुनका दूनूक अलग अलग फोटो लैत छथि)***

वैज्ञानिक एतेक ध्यान राखू जे हमरा प्रयोगशाला मे एके बेर प्रवेश कऽ सकब आ तकर बाद बाहरी संसार सँ कोनो सम्पर्क नहि रहत। मोबाइल आदि हम रखबा लेब। काज शेष भेलाक बादे बहरा सकब। मंजूर अछि ?

दूनू समवेत एकदम मंजूर।

वैज्ञानिक दू सप्ताहक समय दिअऽ।

सुरेश बेस, आब चलू, अहाँ कें आपस पहुँचा दैत छी। ***(जाइत काल दूनू गोटे वैज्ञानिक कें पएर छूबि प्रणाम करैत अछि)।***

रमेश ध्यान रखबै सर।

(वैज्ञानिक आगू आगू आ रमेश, सुरेश हुनकर पाछू पाछू मंच सँ प्रस्थान, प्रकाश बंद। नेपथ्य मे पुनः दू गोटेक स्वर मे घोषणा)

एक एखने खबरि आएल अछि जे वैज्ञानिक अनुपम आपस आबि गेलाह। ओ प्रेस वार्ता मे घोषित केलनि जे हुनकर अपहरणक घटना पुलिसक कल्पना छलैक। नेता सबहक हत्या सँ घबराएल पुलिस बिना किछु बुझने एहि तरहक प्रचार केलक। ओ तऽ कने सबेरे टहलए चल गेल छलाह।

दू उड़ती खबरि इहो अछि जे दूनू बाहुबली आपराधिक जीवन छोड़ि देलनि। आब शहर मे शांति रहत, से आशा करू।

अंक 1 दृश्य 2

मंच सज्जा पछिले दृश्य सन, खाली शास्त्र-पुराणक पोथीक बदला मोटका विज्ञान पोथी, जर्नल आदि राखल। इलेक्ट्रोनिक्स बला टेबुल कने परिवर्तित आ सजाओल। पर्दा पर पोस्टर टाँगल, जाहि पर लीखल छैक "AI Laboratory (highly confidential)'। ई वैज्ञानिक अनुपमक प्रयोगशाला थिक। प्रकाश पहिने पोस्टर पर पड़ैत छैक फेर वैज्ञानिक पर फोकस होइत अछि। अपना प्रयोगशाला मे बैसल ओ लैपटॉप पर कोनो लेख देखि रहल छथि। सामनेक टेबुल पर एकटा छोट आकारक डिजिटल घड़ी, खेलौना बला छोटका ड्रोन, किछु सीडी/डीभीडी, किछु कोटक बटन, आर किछु यंत्रादि पसरल छैक। मंचक उपर पर्दा सँ एकटा एलईडी बल्ब लटकि रहल छैक जाहि सँ किछु अन्तराल पर लाल रंगक प्रकाश मंच कें आलोकित करैत छैक। वैज्ञानिक लैपटॉप देखि चौंकैत छथि।

वैज्ञानिक ई की ? ***(फेर लैपटॉप कें देखऽ लगैत छथि)***

जींस-कुर्ता पहिरने एकटा अपरिचित व्यक्तिक प्रवेश। हाथ मे गिटार सन बाजाक गिगबैग लटकल। एकदम वैज्ञानिकक सामने ठाढ़ भऽ जाइत छथि। प्रकाश पहिने आगन्तुक पर पड़ैत अछि तखन पूरा मंच आलोकित होइत अछि। वैज्ञानिक तरे तर मुसकिआइत छथि मुदा अकचकेबाक अभिनय करैत छथि।

वैज्ञानिक अहाँ के छी, आ एतए भीतर कोना घुसि गेलहुँ ? सुरक्षा अधिकारी अहाँ कें रोकलनि नहि ?

आगन्तुक ***(ठाढ़ भेल, स्वतः कने दूर हटि कए)*** हम तीनू लोक मे स्वच्छन्द विचरण करैत रहैत छी। हमरा के रोकत ? ***(प्रकट, वैज्ञानिक लग जा कए)*** हम एतए आकाश मार्ग सँ एलहुँ। मुदा अहाँ घबराउ नहि, अहाँक सुरक्षा कें हमरा सँ कोनो खतरा नहि अछि।

वैज्ञानिक ***(आश्चर्यचकित हेबाक अभिनय करैत, कुर्सी आगू बढ़बैत)*** अच्छा, बैसू। बाजू अहाँ की चाहैत छी ? चाह मँगाबी ?

आगन्तुक चाह छोड़ू, काज सूनल जाओ। ओना तऽ हम संगीत सँ सम्बन्ध रखैत छी मुदा एखन अहाँ लग वैज्ञानिक आविष्कार सबहक जानकारी लेबा लेल आएल छी।

वैज्ञानिक सब आविष्कारक वर्णन इंटरनेट पर उपलब्ध छैक। आब इंटरनेट अपना ब्रह्मांड मे सबतरि उपलब्ध छैक आ कोनो ग्रहक बासी कतहु बैसल एकरा पढ़ि सकैत अछि।

आगन्तुक हम अहाँक मुहें सूनए चाहैत छी।

वैज्ञानिक बेस, हम किछु पुरान आविष्कारक जानकारी दऽ सकैत छी। जाहि विषय पर शोध चलिए रहल छैक तकरा बारे मे हम किछु नहि कहब।

आगन्तुक कोनो बात नहि, जतेक अहाँ बता सकैत छी से बताउ ***(कागत पर लिखब शुरू करैत छथि)***

वैज्ञानिक ***(किछु सोचि आ घड़ीक आकारक अपन स्मार्टफोन बहार करैत)*** एकरा देखियौ, आब ई बड़ पुरान आविष्कार भऽ गेलैक, एकर अनेक नव रूप सेहो आबि गेलैक अछि मुदा हम एखनहुँ कखनो कए एकर व्यवहार कऽ लैत छी। एकरा स्मार्टफोन कहल जाइत छैक।

आगन्तुक ***(किछु लिखैत)*** ई की काज करैत छैक ?

वैज्ञानिक एना कहियौ - ई की नहि करैत छैक। साधारण दूरभाष सँ लऽ कए सिनेमा देखब, चित्रक आदान प्रदान करब आ रोबोट कें कोनो काजक लेल आदेश देब तऽ पुरान बात भऽ गेलैक, आब हम एतए बैसले बैसल विश्वक कोनो भाग मे बरखा सेहो करबा सकैत छी, कोनो अन्य भाग मे रातिओ मे कृत्रिम सूर्य उगा सकैत छी, कोनो अन्य ग्रह पर आक्रमण करबा सकैत छी, आरो बहुत किछु।

आगन्तुक ***(चिन्तित होइत)*** कृत्रिम सूर्यक निर्माण भऽ गेल। आश्चर्य ! अहाँ कोनो अन्य ग्रह पर आक्रमण करबा सकैत छी, ई तऽ विशेष चिन्ताक बात। ***(लाल प्रकाश हुनका मुह पर पड़ैत अछि, ओ विचलित होइत छथि)*** ई प्रकाश किएक ?

वैज्ञानिक एतुका सब गतिविधिक जानकारी केन्द्र कें पठाओल जा रहल छैक। असुविधाक लेल क्षमा चाही।

आगन्तुक कोनो बात नहि, आगू कहियौ।

वैज्ञानिक ***(हाथ मे एकटा प्लास्टिक जकाँ कोनो पारदर्शी चीज उठबैत)*** एकरा देखियौ, ई अद्‌भुत वस्तु थिक।

आगन्तुक ***(किछु नहि देखैत)*** अहाँ हमरा बड़ बुड़िबक बुझैत छी की ? खाली हाथ देखा कए कहैत छी एकरा देखियौ। एना ठकू नहि।

वैज्ञानिक इएह तऽ एकर विशेषता छैक, हमरा हाथ मे अछि मुदा अहाँ देखि नहि सकैत छिऐक। ई अदृश्य पदार्थ छिऐक। एकर गुण सब सुनबैक तऽ ततेक आश्चर्य लागत जे अहाँ फेर कहब ठकैत छी।

आगन्तुक बेस, कहियौ।

वैज्ञानिक संक्षेप मे बूझि लिअऽ जे धरती पर जे कोनो प्राकृतिक धातु (metal) पदार्थ अछि तकर नीक सँ नीक गुण एकरा गुणक तुलना मे करोड़ो गुणा न्यून लागत। आ सबसँ महत्वपूर्ण बात जे एकरा पर तापक कोनो असरि होइते नहि छैक, कतेको सूर्यक सम्मिलित ताप कें ई सहि सकैत अछि। एकर वस्त्र जे कोनो वस्तु कें ओढ़ा देबैक ओ अदृश्य भऽ जाएत। ओकरा आगिक कोनो डरे नहि रहतै।

आगन्तुक ***(बेस आश्चर्यचकित होइत)*** सत्ते कहैत छी ?

वैज्ञानिक हम तऽ पहिनहि कहलहुँ जे अहाँ कें लागत हम झूठ बजैत छी। हमर काज छल सुना देब, विश्वास करी बा नहि से तऽ अहाँ जानी।

आगन्तुक ***(बेस चिन्तित होइत)*** ठीक छैक, किछु आर सुनाउ।

वैज्ञानिक एकर दोसर गुण छैक जे विशेष तरीका सँ एहि मे बिजलीक धारा बहाओल गेला सँ ई पारदर्शी नहि रहि जाइत छैक, एकरा सँ लेजर प्रकाश बहराइत छैक।

आगन्तुक ***(लिखबाक उपक्रम करैत)*** ई लेजर प्रकाश की होइत छैक ?

वैज्ञानिक कृत्रिम सूर्य जकाँ पूर्णतः मानव निर्मित अजूबा। लेजर प्रकाश धरती पर प्रायः सब क्षेत्र मे उपयोग भऽ रहलैक अछि आ सब लोक एकर गुण सँ परिचित अछि। एही प्रकाश द्‌वारा हम एतए बैसले बैसल कोनो ग्रह पर शत्रु कें नष्ट कऽ सकैत छी।

आगन्तुक बुझबा मे तऽ नहि आएल मुदा किछु आर सुनबा लेल उत्सुक छी।

वैज्ञानिक ***(टेबुल पर सँ खेलौना बला ड्रोन कें उठबैत)*** ई अन्तरिक्ष यान छिऐक जे अपना ब्रह्मांड मे कतहु जा सकैत अछि। एकर ओजन मात्र सौ ग्राम छैक मुदा ई एक हजार किलोग्रामक ओजन उठा कए उड़ि सकैत अछि।

आगन्तुक ई तऽ पुष्पक विमानक कान कटलक यौ।

वैज्ञानिक आब ककर कान कटलक आ ककर नाक कटलक तकर अन्दाज हमरा तऽ नहि अछि। अहाँ कोन काल्पनिक पुष्पक विमानक चर्चा करैत छी से तऽ अहीं जानी मुदा हमर टीम एकटा एहन यान पर शोध कऽ रहल अछि जे अन्य ब्रह्मांडक यात्रा सेहो कऽ सकत। एकर बारे मे हम एखन किछु नहि कहि सकब।

आगन्तुक मुदा अन्य ब्रह्मांड पर जेबा लेल अहाँ सब कें देवता सबहक संग युद्ध करऽ पड़त।

वैज्ञानिक ***(कने खिसिएबाक मुद्रा मे)*** ई तऽ अनर्गल बात भेल, देवता लोकनि अपने सबतरि बौआइत रहथि से नीक आ मानव अपन आविष्कारक बल पर कतहु जाए तऽ हुनका सँ युद्ध करऽ पड़त। ओना कोनो युद्ध लेल हम सब रोबोट सेना तैयार कइए लेने छी।

आगन्तुक रोबोट सेना की भेलैक ?

वैज्ञानिक रोबोट माने भेल यंत्र मानव जे पूर्णतया मानव निर्मित अछि। छिऐक तऽ ई एक प्रकारक यंत्र मुदा प्रजनन छोड़ि बाँकी सब काज मनुक्खे जकाँ करैत अछि। सीमित मात्रा मे प्रजनन सेहो कऽ सकैत अछि, माने दोसर रोबोट कें बना सकैत अछि यदि अनुमति दऽ दियैक।

आगन्तुक ***(आश्चर्य सँ आँखि पसारैत)*** अद्भुत, एहि रोबोट सेनाक संहारक कोनो विधि ?

वैज्ञानिक ओ हम नहि कहि सकैत छी। एतेक बूझि लिअऽ जे अस्त्र शस्त्रक कोनो असरि नहि होइत छैक एकरा पर।

आगन्तुक ***(कने आर चिन्तित होइत)*** बेस, आगू कहियौ।

वैज्ञानिक एकरा देखियौक ***(हाथ मे एकटा बटन सदृश वस्तु लैत)*** ई भेल हमर प्रतिरूप। हमर मस्तिष्कक सब ज्ञान एहि मे भरल छैक। एकरा साइबोर्ग (cyborg) अवस्था कहल जाइत छैक। हम आब एहि अवस्था मे अमर भऽ गेल छी। एकर एक प्रति राष्ट्रीय संग्रहालय मे सेहो राखल छैक। आब हमरा मृत्युक कोनो डर नहि अछि।

आगन्तुक (***लिखब बन्द करैत आ कागत कें पॉकेट मे रखैत***) बर बेस, एहि सँ बेसी हमरा दिमाग मे एखन नहि अँटत, तें हम चलैत छी। एतेक जानकारीक लेल बहुत धन्यवाद। ***(प्रस्थान)***

वैज्ञानिक ***(दर्शक कें सम्बोधित करैत)*** अहाँ सब चिन्हलिएनि ई के छलाह ? नहि ने ? अरे ओएह नारद बाबा, वेष बदलि कए आएल छलाह देवता सबहक दिस सँ धरती पर जासूसी करए लेल। हमरा खुफिया रिपोर्ट भेटि गेल छल तें विज्ञानक प्रगतिक बारे मे चुनि चुनि कए बात कहलिएनि। हमर बात सूनि कए केहन चिन्तित भऽ रहल छलाह से तऽ अपने सब देखिये लेलियैक। हमरा तऽ लागल जे बेसी खिस्सा कहबनि तऽ कतहु हॉर्ट अटैक ने भऽ जाइन। मुदा भागि गेलाह। देखियौ आगू की करैत छथि।

(वैज्ञानिक द्वारा लैपटॉप बन्द करबाक उपक्रम, प्रकाश शनैः शनैः बंद होइत अछि, नेपथ्य मे दू बेर पिस्तौल चलबाक शब्द सूनऽ मे अबैत अछि। किछु लोक एम्हर ओम्हर दौड़ैत देखाइत अछि। तखने घोषणा -

घबराउ नहि, एहि गोली सँ दूनू बाहुबली रमेश आ सुरेशक अन्त भेल। करीब बीस बरखक बाद राज्य मे शान्ति बहाल होएत। चलू महावीर मंदिर मे लड्डू चढ़बै लेल। सब जा रहल अछि।

अंक 1 दृश्य 3

मंच सज्जा मे मामूली परिवर्तन, किताब बला टेबुल हटा देल गेल अछि, इलेक्ट्रॉनिक्स बला टेबुल पहिल दृश्य जकाँ अस्तव्यस्त भेल अछि। बीच बला टेबुल पर किछु खाली बोतल राखल अछि जाहि सँ ई बोध होइ जे एतए लोक शराब पीलक अछि। ई स्थान बाहुबली रमेश आ बाहुबली सुरेशक मृत्युस्थल अछि। दूनू नीचा मे सूतल पड़ल अछि, दूनूक हाथ लग पिस्तौल छैक। मंचक दूनू कात सँ दूटा यमदूतक प्रवेश। प्रकाश हुनका दूनूक मुह पर पड़ैत अछि। दूनू मरल लोक लग आबि कए ठाढ़ भऽ जाइत अछि। तखन प्रकाश यमदूतक मुह सँ नीचा दिस मृतक पर पड़ैत छैक। यमदूत ओकरा दूनू कें उठेबाक चेष्टा करैत अछि तखने ओ दूनू मृतक ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

रमेश ***(हाथक इशारा सँ स्वागत भाव देखबैत)*** यमदूत लोकनिक मर्त्यलोक मे स्वागत अछि।

दूत-एक हमरा सब कें स्वागत कथी लेल करैत छी ? हमरा सबहक काज अछि मात्र अहाँ दूनू कें लऽ कए यमराजक दरबार मे हाजिर करब, फेर कोनो दोसर ड्यूटी मे लागि जाएब।

सुरेश अरे जेबे करब, कने सुस्ता लिअऽ, एक जूम तमाकुओ तऽ खा लिअऽ, भरि दिन यमलोक आ मर्त्यलोकक बीच दौड़ैत दौड़ैत थाकि जाइत होएब ने।

दूत-दू थाकि तऽ जाइते छी मुदा काजे ततेक ने भऽ गेल अछि जे की कहू ? साँसो लेबाक फुरसति कहाँ भेटैत छैक ?

रमेश तें ने कहैत छी, कने विलमि जाउ।

(दूनू यमदूत एक दोसराक मुह ताकए लगैत छथि)

दूत-एक ***(दूत-दू सँ)*** की विचार छौ ?

दूत-दू ठीक छै, एक बेर कने नियम भंग कइए ली।

सुरेश बहुत नीक। ***(तमाकू चुना कए दैत)*** लिअऽ, खाउ।

दूनू दूत ई की छिऐ ?

रमेश आहि रे बा ? तमाकूओ नहि खेने छिऐक कहियो ?

दूत-दू ई सब यमलोक मे थोड़बे भेटै छै जे देखने रहबै ?

सुरेश अच्छा छोड़ू एकरा, आब ई कहू, हमरा सब कें यमलोक मे की की करऽ पड़तै ?

दूत-एक से कोना कहू ? यमराज जखन फैसला सुनेताह तखन ने बुझबै।

रमेश फैसला तऽ हमरा सब कें बुझले अछि, नरके मे जेबाक अछि। ताहि हिसाबें कहू ने की सब हेतैक।

दूत-दू सबटा तऽ हमरा सब कें नहि बूझल अछि, किछु देखने छिऐक से कहैत छी, जेना गरम तेलक कुण्ड मे फेकि देनाइ।

सुरेश अच्छा ! तेल कतेक गरम रहैत छैक ? माने ओकर तापमान कतेक रहैत छैक ?

दूत-एक ई की जानए गेलियै ? गरम तेल गरम तेल होइत छैक, बस एतबे। हम सब की ओहि मे पैसलियै जे बुझबै कतेक गरम छैक।

रमेश ऍं यौ एतबो नहि बुझैत छिऐ जे 200 डिग्री पर गरम कएल गेल तेल आ 500 डिग्री पर गरम कएल गेल तेल मे अन्तर होइत छैक ? अच्छा ई कहू जे तेल कोन वस्तुक रहैत छैक ? सरिसो, तीसी, नारिकेल, सोयाबीन आ कि कोनो फैंट फाँट बला ?

(दूनू यमदूत एक दोसराक मुह तकैत छथि, किछु नहि बूझि रहल छथि जे की उत्तर देथि।)

दूत-एक देखू, ई हमरा सब कें नहि बूझल अछि आ ने एहि सँ कोनो सरोकारे अछि। अहाँ यमलोक पहुँचि कए यमराज सँ बूझि लेब। चलू देरी जुनि करू।

सुरेश कने सूनू तऽ। ओ तेल कोना गरम कएल जाइछै ? माने बिजलीक हीटर लागल छैक कि सौर ऊर्जा सँ आ कि जारनि सँ ?

दूत दू हमरा सब कें किछु नहि बूझल अछि। चलू देरी भऽ रहल अछि। ***(दूनू दूत दूनू मृतक कें पकड़बाक चेष्टा करैत अछि, सुरेश, रमेश जोड़ सँ ओकर हाथ झटकि दैत छैक जाहि सँ ओ सब खसि पड़ैत अछि, फेर अपना कें सम्हारैत ठाढ़ होइत अछि)***

दूत एक अहाँ सब यमलोक नहि जेबै ?

सुरेश जेबै तऽ जरूरे, मुदा बिना सब बात फरिछेने विदा नहि होएब। अहाँ सब जाउ आ यमराज कें एतहि बजौने अबियनु, ताबत हम सब एतहि रहब। ***(दूनू गोटे अपन कमीज कें समेटि बाँहि उघार करैत अछि आ फूलल मांशपेशी कें निहारैत अछि। दूनू यमदूत ओहि दूनूक शारीरिक सौष्टव कें देखैत कने भयभीत होइत छथि।)***

दूत-दू अहाँ सब नहिए जेबैक ?

रमेश कहलहुँ ने, यमराज सँ सब बात फरिछा लेलाक बादे जेबैक।

दूत-एक जे इच्छा। ***(संगी सँ)*** चल, यमराज कें खबरि कऽ दिएनि। ***(दूनूक प्रस्थान)***

सुरेश नीक जकाँ छकेलियनि सरबे कें। देखही आब की होइत छैक।

रमेश हेतैक की ? देखही ने कोना यमराजो कें बोकियबैत छिऐनि। ***(दूनू नीचा मे पड़ि रहबाक अभिनय करैत अछि)***

मंच पर अन्हार होइत अछि। सुरेश, रमेश मंच सँ हटि जाइत छथि। नेपथ्य मे दू व्यक्तिक स्वर मे घोषणा -

एक राजनेता सबहक सामूहिक नरसंहार मे अपराधी कें पकड़बा मे असफल पुलिस घोषणा केलक जे बाहुबली रमेश आ सुरेश पुलिसिया मुठभेड़ मे मारल गेल। इनामक घोषित राशि सेहो जिला पुलिस हथिया लेलक अछि।

दू एकटा न्यूज चैनल मे तऽ एहि बात पर संदेह व्यक्त कएल गेल छैक। ओकरा रिपोर्टरक जानकारीक अनुसार ओ दूनू आत्महत्या कऽ लेलक। पुलिस कें तऽ पतो नहि छलैक ओकरा दूनूक मरबाक। जंगल मे चरबाह सब गोलीक आवाज सूनि लोक कें खबरि केलकै तखन तकैत तकैत कतेक कालक बाद ओतए पुलिस पहुँचलै।

अंक 1 दृश्य 4

मंच सज्जा बदलैत अछि। आब मात्र किछु कुर्सी आ एकटा खाली टेबुल रहि जाइत अछि। मंच पर किछु पैघ पोस्टर एहि तरहें लगाओल गेल अछि जे आसानी सँ एकटा हटा कए दोसर प्रदर्शित कएल जा सकए। एहि पोस्टर पर लिखल रहैत अछि 'यम दरबार', 'विष्णु दरबार', आदि। एकटा सादा पोस्टर सेहो रहैत अछि। एखन 'यम दरबार' प्रदर्शित अछि। प्रकाश एहि पोस्टर पर पड़ि रहल अछि।

मंच पर यमराज आ चित्रगुप्त कुर्सी पर बैसल छथि। यमराजक रूप-सज्जा पौराणिक वर्णनक हिसाबें। तहिना चित्रगुप्त पुरना मुनीम जकाँ धोती, कमीज पहिरने आ माथ पर एकटा टोपी। ओ टेबुल पर अपना सामने बड़का रजिस्टर उनटौने किछु देखि रहल छथि। प्रकाश पहिने ओहि पोस्टर पर पड़ैत अछि। तकर बाद यमराज पर आ फेर चित्रगुप्त पर। तखन पूरा मंच पर प्रकाश पसरैत अछि।

यमराज ***(चिन्तित मुद्रा मे)*** चित्रगुप्त महराज, पहिल बेर देखि रहल छी यमदूत लोकनि कें एतेक देरी लागि गेलनि, किछु अनिष्टक आशंका भऽ रहल अछि।

चित्रगुप्त अबितहि हेताह, रस्ता मे बैसि कतहु पानि पीबैत हेताह। भरि दिन भरि राति खटितहि रहैत छथि, थाकि जाइते हेताह।

यमराज से ठीके कहैत छी, काजे ततेक ने बढ़ि गेलैक अछि। ***(दूनू यमदूतक प्रवेश)***

चित्रगुप्त ओएह देखियनु, जकरे नाम लालछड़ी सएह चलि आबए।

यमराज ***(कने अकचकाइत)*** खाली हाथ देखैत छी, की भेल ?

दूत-दू की कहू, एहन मृतात्माक पाला पड़ल जे हमरे सब कें छका देलक।

यमराज ***(आश्चर्यचकित होइत)*** से की ?

दूत-एक दूटा लोक छल जे अपना कें बाहुबली कहैत छल, नाम छलैक सुरेश आ रमेश। ओ पूछऽ लागल नरक मे कोन तरहक यंत्रणा देल जाइत छैक।

दूत-दू हम सब गलती सँ कहि देलियै जे गरम तेलक कुण्ड मे फेकल जाइत छैक। बस, तकर बाद ओ सब प्रश्न पर प्रश्न करऽ लागल, तेल कतेक गर्म रहैत छैक, तेलक

तापमान कतेक होइत छैक ? कोन पदार्थक तेल रहैत छैक - नारिकेल तेल कि सरिसो तेल कि फैंट फाँट बला।

दूत-एक हमरा सब कें एकर उत्तर बूझल नहि छल। ओ दूनू कहलक जे जाबत एहि प्रश्नक उत्तर नहि भेटि जाएत ताबत यमलोकक यात्रा नहि करब। जाउ यमराज कें अपनहि आबए कहियनु।

यमराज ***(चित्रगुप्त कें सम्बोधन करैत)*** की चित्रगुप्त महराज, अहाँ कें एहि प्रश्नक उत्तर बूझल अछि ?

चित्रगुप्त ***(खाता कें उनटा पुनटा कए देखैत)*** एहि तरहक कोनो सूचना खाता मे नहि लिखल अछि धर्मराज।

यमराज तखन उत्तर बिनु बुझने हमरो जाएब उचित होएत की ?

चित्रगुप्त अहाँ कें जाएब जरूरी अछि धर्मराज, अहाँ अपना ढंगें बुझा सुझा कए अथवा साम दाम दंड भेद आदिक प्रयोग कऽ कए ओहि दूनू कें यमलोक आनि सकब। हमर तऽ विचार जे अविलम्ब चल जाउ। मृत्युलोकक भोग पूर भऽ गेलाक बाद ओतए ककरो रहब अनुचित।

यमराज बेस जे विचार अपनेक। ***(मंच पर अन्हार, सब गोटे ससरैत छथि)***

अंक 1 दृश्य 5

मंच पर लागल पोस्टर मे परिवर्तन, किछु कुर्सी आ एकटा सादा टेबुल ओहिना अछि, आब सादा पोस्टर प्रदर्शित अछि। मृत्युस्थल पर रमेश आ सुरेश सूतल पड़ल छथि, तखने दूनू यमदूतक संग यमराजक प्रवेश। प्रकाश पहिने यमराज पर पड़ैत अछि, ओ जेना जेना आगू बढ़ैत छथि, तहिना हुनका मुह पर प्रकाश सेहो बढ़ैत अछि, मंचक बीच मे आबि यमराज रुकि जाइत छथि तखन प्रकाश क्रम सँ दूनू मृत शरीर पर पड़ैत अछि। फेर शनैः शनैः पूरा मंच प्रकाशित होइत अछि।

यमराज ***(दूत सबकें सम्बोधित करैत, प्रश्नवाचक दृष्टिएँ)*** इएह दूनू मृतात्मा छथि की ?

(दूनू मृतात्मा हड़बड़ा कए उठि जाइत छथि आ एकहि संग धर्मराजक पैर पर खसैत)

रमेश, सुरेश धर्मराजक जय हो। महाराज वैवस्वतक जय हो।

यमराज ***(कने हटि कए, स्वतः)*** पहिल बेर एहि मृत्युलोक मे कियो यमराजक जयजयकार कऽ रहल अछि, जरूर ई दूनू कोनो विशिष्ट व्यक्ति अछि। ***(लग आबि, प्रकट)*** अहाँ सब यमदूतक संग नहि जा कए बहुत पैघ नियम भंग केलियै, जे आइ तक नहि भेल छलैक। एहि अपराध लेल अहाँ सब कें सजाए बढ़ाओल जा सकैत अछि।

रमेश पहिने आसन ग्रहण कएल जाओ सूर्यपुत्र ***(हुनका हाथ पकड़ि कुर्सी पर बैसबैत छथि, अपने दूनू गोटे टेबुलक दूनू कात ठाढ़ होइत छथि, यमदूत लोकनि काते मे ठाढ़ रहैत***

छथि) यमलोक जेबा लेल तैयारे छी धर्मराज, आ जे कोनो सजाए भेटत ताहि लेल सेहो तैयार छी।

सुरेश मुर्दा पर जेहने दश मोनक बोझ तेहने बीस मोनक बोझ। जखन नरके मे बास करबाक अछि आ यातना सहबाके अछि तखन हजार बरखक बदला दू हजार बरख सएह ने। कोनो फर्क नहि पड़ैत छैक।

यमराज ***(आश्चर्यचकित होइत)*** अहाँ सब अपने मोने कोना बूझि गेलिऐ जे नरके मे बास करबाक अछि ?

रमेश धर्मराजक जय हो। बुझले अछि जे हम सब कोनो अबोध बच्चा नहि छलहुँ ने। ब्रह्महत्या, नारीहत्या, भ्रूणहत्या, गोहत्या आदि सँ लऽ कए छागरहत्या, शूकरहत्या, कुक्कुटहत्या, मत्स्यहत्या, छुटले की छल ?

यमराज ***(आश्चर्य प्रदर्शित करैत)*** अच्छा !

सुरेश ओतबे नहि देव, अपहरण, बलात्कार, व्यभिचार मे सेहो हमरा दूनूक जोड़ नहिए रहल हेतैक। व्यभिचारक आनन्दक वर्णन पर हम दूनू मिल कए एकटा प्रामाणिक पुस्तक सेहो लिखलहुँ जकर एके बरखक भीतर एकैसम संस्करण छपि गेल छैक।

रमेश “मातृवत् परदारेषु” उक्तिक उनटा “भोग्या सकला स्त्रिया:” के उक्ति चरितार्थ कएल तऽ ई सोचिए कए ने जे नरक मे दीर्घ प्रवास करब।

सुरेश ओतबे नहि, नरक मे देल जाए बला यातना आदिक वृहत जानकारी सेहो लऽ लेने छी धर्मराज। सबटा शास्त्र पुराण आर अन्यान्य ग्रन्थ सब सेहो चाटि गेल छी।

रमेश जतेक प्रकारक अपराध हम सब कएल अछि ओहि सब लेल एतुका ग्रन्थ सब मे तऽ सजाएक प्रावधानो नहि छैक। लगैत अछि ग्रन्थकार कें ओहि अपराधक कल्पनो नहि छलनि। तकरा बारे मे अपने कोना निर्णय लेब से सोचि राखू धर्मराज।

यमराज ओ तऽ बादक बात भेल, एखन एहि मृत्युलोक मे रुकल किएक छी जखन कि अहाँ सबहक भोगक अवधि शेष भऽ गेल अछि ?

सुरेश महाराज वैवस्वत, अपने कें कष्ट देल एतए बजाए से मात्र एकटा छोट अनुरोध करबाक हेतु।

रमेश हमर आग्रह जे दूनू यमदूत कात भऽ जाथि। ***(यमराज इशारा करैत छथिन, दूनू दूतक प्रस्थान)***

सुरेश हमरा सबहक आग्रह एतबे जे अपना संग पाँच किलो ओजनक एकटा ब्रीफकेस लऽ जेबाक अनुमति भेटए।

यमराज ***(आश्चर्यचकित होइत)*** ई की बाजि रहल छी ?

रमेश महाराज औदुम्बरक जय हो। बुझले होएत जे आब फोकटियो हवाइ जहाज कम्पनी सब लोक कें सात किलो ओजन तक के ब्रीफकेस अथवा हैंडबैगक अतिरिक्त पन्द्रह

किलो चेकइन लगेज लऽ जेबाक सुविधा दैत छैक। हम सब तऽ मात्र पाँच किलोक अनुमति माँगि रहल छी। सेहो ब्रीफकेस टा, कोनो चेकइन लगेजक झंझट नहि।

यमराज मुदा ई कोना सम्भव छैक ? आइ तक कहियो एना नहि भेलैक।

सुरेश अपने तऽ धर्मराज छी, हम सब मृत्युलोकक अदना प्राणी अपने कें की बुझाएब ? तैयो पुछैत छी जे जखन इन्द्र गौतम ऋषिक पत्नी अहिल्याक शीलभंग करबा लेल गेलखिन तऽ ओहि सँ पहिने ओहन घटना भेल छलैक की ?

यमराज अहाँ सब की कहऽ चाहैत छी ?

रमेश एतबे जे कोनो नव काज शुरू करबा लेल पहिने की भऽ गेल छैक तकरा देखब जरूरी नहि। एना जँ लोक करऽ लागए तऽ कहियो कोनो नव काज शुरुए नहि हेतैक।

यमराज मुदा यमलोक मे मृत्युलोकक चीज वस्तु कोना रहि सकैत छैक ?

सुरेश एखनहु तऽ रखने छिऐक धर्मराज। नरकक विभिन्न कुण्ड मे जे मानव मल, मूत्र, रक्त, मज्जा, वीर्य, अश्रु आदि भरल छैक से यमलोक मे तऽ नहिए भेटैत हेतैक। मानव तऽ मर्त्यलोकेटा मे छैक देव। ओ सामान सब तऽ एतहि सँ उठा कए लऽ गेलियैक।

यमराज सम्भवतः अहाँक बात ठीक अछि, मुदा ई काज बहुत दिन पहिने भेल छलैक जखन हमर पूर्वक पूर्वक पूर्वक यमराज यमलोकक काज देखैत छलखिन।

रमेश कहुना भेल होइक, भेलैक तऽ। बस, तखन हमरा सबहक निवेदन स्वीकार कऽ लेल जाओ सूर्यपुत्र।

सुरेश यदि अपनेक यान मे जगहक समस्या हो तऽ हम सब विशेष यानक व्यवस्था कऽ सकैत छी। ओ यान एतुका वैज्ञानिक लोकनि कठिन शोध सँ तैयार केलनि अछि जे ब्रह्मांड मे सबतरि जा सकैत छैक।

यमराज नहि नहि, तकर काज नहि पड़तैक मुदा हम अपने मोने ई अनुमति नहि दऽ सकैत छी। एहि लेल हमरा देवता सबहक संग विशेष मीटिंग करए पड़त।

रमेश कइये लेल जाओ धर्मराज, ताबत हमरा दूनू कें एतहि छोड़ि देल जाओ। ओतए चल गेलाक बाद घूरि कए तऽ आएल पार नहि लागत।

यमराज ठीक छैक, हम दूनू यमदूत कें अहाँ दूनूक पहरा मे लगा दैत छिएनि। ***(संकेत करैत छथि, दूनू यमदूतक प्रवेश),*** हम कने देवलोक मे एकटा इमर्जेन्सी मीटिंग करबा लेल जाइत छी, ताबत हिनका दूनू कें एतहि रखियनु। ***(यमराजक प्रस्थान)***

सुरेश अपने सब आराम सँ भीतर मे बैसू ने। कतेक काल ठाढ़ रहब। भीतर मे अपनेक लेल सब इन्तजाम कएल अछि। ***(इशारा करैत छथि)***

दूत-एक भगबै नहि ने यौ ?

रमेश भागि कए कतए जेबै ? मरल लोक समाजक बीच कोना जेतैक ? सब भूते बूझि लेत आ ढेपियौनाइ शुरू करत। अपने सब निश्चिन्त रहू।

दूत-दू बेस ***(दूनूक प्रस्थान)***

सुरेश ***(दर्शक दिस मुह घुमा)*** देवलोक मे इमर्जेन्सी मीटिंग चलि रहल छैक, परमीसन तऽ भेटबे करतैक। किएक ने जल्दी जल्दी ब्रीफकेस तैयार कऽ ली।

रमेश आ विशेष यान कें सेहो तैयार करबा कए राखिए ली। किन साइत ?

(दूनूक प्रस्थान, मंच पर अन्हार)

अंक 1 दृश्य 6

मंच सज्जा पहिने जकाँ मुदा आब जे पोस्टर प्रदर्शित अछि ताहि पर लीखल छैक 'विष्णु दरबार'। ब्रह्मा, विष्णु आ महेश कुर्सी पर बैसल छथि। हिनका सबहिक मेकअप पौराणिक वर्णन हिसाबें कएल गेल अछि। महेश हाथ मे डमरू रखने छथि आ जटा सेहो बेस पैघ बनल छनि। ब्रह्मा आ विष्णु अपन अपन वस्त्राभूषण सँ अपनहि चीन्हल जाइत छथि। प्रकाश शनैः शनैः तीनू पर पड़ैत अछि। तकर बाद प्रवेश पथ पर पड़ैत अछि जतए नारद बाबा अपन पौराणिक वेष मे वीणा सहित आबि रहल छथि। नारद जखन लग पहुँचैत छथि तखन पूरा मंच आलोकित होइत अछि।

नारद नारायण, नारायण ! त्रिमूर्ति कें साष्टांग दंडवत।

विष्णु स्वागत मुनिश्रेष्ठ। आसन ग्रहण कएल जाओ ***(एकटा कुर्सी दिस इशारा करैत)*** बहुत दिनक बाद दर्शन भेल।

नारद ***(कुर्सी पर बैसैत)*** हँ, कने चल गेल छलहुँ पृथ्वी भ्रमण हेतु। ओम्हरहु बहुत दिन सँ नहि गेल रही से सोचल जे देखि लियैक खुरापाती मानव जंतु की कऽ रहल अछि।

ब्रह्मा मानव कें खुरापाती किएक कहलियैक देवर्षि ? ओ तऽ हमर अन्यतम सृजन थीक।

नारद अपनेक वचन सत्य चतुरानन, मुदा सोचियौ ओकर मस्तिष्क केहन तेज बना देलियैक। कहियो इहो सोचलियै जे एहन स्थिति आबि जेतैक जे ओ मानव देवलोक पर विजय अभियान लेल तैयार भऽ जाएत। राक्षस सँ अपने सब बहुत बेर युद्ध कएल, छल बल सँ जीतल मुदा मानव अहाँ सँ छलो बल मे बीसे रहत। ओकर कपटबुद्धिक आगू देवलोकक कोनो बुधियार नहि टिकता।

महेश ***(जटा पर हाथ फेड़ैत आ मुसकिआइत)*** नीके ने, एतए हम सब फोकट मे मजा लूटि रहल छी। ओ सब तऽ कहुना दिन राति खटि कए किछु उपार्जन करैत अछि, आविष्कार करैत अछि, आब जमाना आबि गेलैक अछि जे समस्त ब्रह्माण्ड मे ओकरे सबहक राज होइक।

विष्णु औघड़दानी कें तऽ एहिना चौल फुराइत रहैत छनि।

महेश चौल नहि, सत्य बात। मानव हमरा सब कें पूजा करैत, प्रशंसा करैत, टिटकारी दैत अकास ठेका देलक, अकर्मण्य बना देलक आ अपने कतेक आगू बढ़ि गेल।

विष्णु अच्छा, सुनियौ देवर्षि कें की कहबाक छनि। अपने मुनिश्रेष्ठ कने फरिछा कए कहियौ की की देखलियै, बुझलियै।

नारद देखलियै बहुत किछु, बुझलियै ओलक टोंटी। तैयो किछु बता दैत छी। पहिने हम रस्ता पेड़ा पर छद्म रूपें घुमैत रहलहुँ आ लोकक बीच वार्तालाप सुनैत रहलियै, धिया पूताक खेलेनाइ देखैत रहलियैक। अद्भुत नव नव वस्तुक आविष्कार भऽ गेलैक अछि। सबतरि सुनियै रोबोट सँ ई काज करा ले, रोबोट सँ ओ काज करा ले, एक ठाम देखलियै बच्चा सब फतिंगा जकाँ मसीन सब मे पचास साठि टा पजेबा बान्हि कए उड़ा रहल छल। पुछलियै ई की छिएक तऽ सब हँसऽ लागल।

ब्रह्मा फेर किछु बुझलियै की नहि ?

नारद हँ, एकटा बच्चा कें दया एलै, कहलक “बाबा ई ड्रोन छिऐक, अहाँ कोन शहर मे रहैत छी ? आब ड्रोन तऽ सबतरि भेटैत छैक, दोकान सँ चीज वस्तु आब सबहक घरे घर एकरे द्वारा पठाओल जाइत छैक” ।

विष्णु मुनिश्रेष्ठ, ठीक सँ सुनलियै की नहि ? ओ ड्रोन बाजल की द्रोण ?

महेश अहूँ की मजाक करैत छिऐक जनार्दन। द्वापर युगक गुरु द्रोण की आब कलियुग मे लोकक घरे घरे दोकान सँ सामान पहुँचबैत हेथिन ?

नारद हमरहु पहिने भेल जे बच्चा कें बजबा मे किछु गलती भेलैक, ड्रोन नहि द्रोण कहबाक छलैक। हम ओकरा फेर टोकलियै तऽ फेर सब बच्चा हँसए लागल, कहलक ई ड्रोन छिऐक, अंग्रेजी भाषाक शब्द छिऐक। हम तऽ गुम्मे रहि गेलहुँ।

ब्रह्मा ***(कने चिन्ता आ आश्चर्यक भाव लेने)*** बेस, आर की सब देखलियै, बुझलियै ?

नारद जखन एहि तरहें जिज्ञासा शान्त नहि भेल तऽ पता लगा कए एकटा वैज्ञानिकक कार्यालय मे घुसि गेलहुँ।

विष्णु वैज्ञानिक ? ई कोन जीव होइत छैक ? पंडित सब तऽ सुनने छलियै, ऋषि मुनि तपस्वी आदि सँ भेंट भेले अछि मुदा वैज्ञानिक शब्द तऽ पहिले पहिल सूनि रहल छी।

महेश ***(डमरू कें दू बेर बजबैत)*** तें ने हम कहलहुँ, हम सब घमण्ड मे चूर रहलहुँ, बुझैत रहलियै जे एहि ब्रह्मांड पर अनन्त काल तक हमर राज रहत, इनारक बेंग जकाँ देवलोकक चारि टा पहाड़, नदी, झील आ अप्सरा सबहक बीच दिन बितबैत रहलहुँ आ आन ठाम की की विकास भेलैक से बुझबाक कहियो चेष्टे नहि केलहुँ। ओ तऽ धन्य कही नारद मुनि कें जे किछु नव बातक जानकारी अनलनि।

नारद ओहि वैज्ञानिक सँ बहुत रास जानकारी भेटल, मुदा जेना कहलहुँ ने, बात सब ठीक सँ बुझबा मे नहि आएल। हम ओहि वार्तालापक अंश कें जे किछु लीख सकलहुँ से देखा दैत छी। ***(विष्णुक हाथ मे एकटा कागत दैत छथिन, ओ स्वयं पढ़ि कए ब्रह्मा आ***

महेश कें बेराबेरी पढ़ऽ दैत छथिन, कियो ठीक सँ बात नहि बूझैत छथि, तीनू देव कें आश्चर्य सँ आँखि पसरले रहि जाइत छनि)

विष्णु बहुत बात तऽ हमहू नहि बुझलहुँ मुदा चिन्ताक बात एकेटा जे आब मानव दोसर ब्रह्माण्ड पर जेबाक तैयारी मे लागल अछि। अपना ब्रह्माण्डक विभिन्न भाग मे ग्रह नक्षत्र पर यान आ दूत पठा देलक अछि।

ब्रह्मा एहि अभियान कें रोकबा लेल किछु तऽ सोचहि पड़त।

(एतबा मे हकासल पियासल अपसियाँत भेल यमराजक प्रवेश)

यमराज त्रिदेव कें हमर साष्टांग दंडवत स्वीकार हो।

विष्णु धर्मराजक स्वागत, मुदा एना अपसियाँत किएक भेल छी ? यमलोक मे सब कुशल तऽ अछि ने।

यमराज कुशल क्षेम बाद मे कहब, हम दौड़ल आएल छी एकटा अति आवश्यक मंत्रणा लेल।

ब्रह्मा मुदा चित्रगुप्त कें कतए छोड़ि देलिएनि ? हुनका बिना कोनो मंत्रणा कोना होएत ?

यमराज से ठीके, हड़बड़ी मे ध्याने नै रहल। एखनहि हम दूत पठा हुनका बजा लैत छी। ***(नेपथ्य दिस देखि)*** कने चित्रगुप्त कें जल्दी दरबार मे अबै लेल कहि देबनि। ***(प्रत्यक्ष भऽ कए)*** ताबत हमर समस्या तऽ सूनल जाओ।

महेश ठीक छैक, कहल जाओ धर्मराज।

यमराज किछु समय पूर्व मर्त्यलोक मे दू गोटेक टिकट कटि गेलनि। हमर दूत हुनका आनऽ गेल। ओ दूनू अपना कें बाहुबली कहैत छलखिन। एकटा विचित्र प्रश्न पूछि ओ दूनू दूत कें घुरा देलखिन। प्रश्न कठिन तऽ नहि छलैक मुदा हमरो सब कें ओकर उत्तर नहि बूझल अछि। तकर बाद चित्रगुप्त महराज सँ मंत्रणा केलाक बाद हमरा स्वयं ओतए जाए पड़ल।

(एही बीच मोट मोट खाता पजियौने अपन पारम्परिक वेश मे चित्रगुप्तक प्रवेश)

यमराज ***(चित्रगुप्त कें सम्बोधित करैत)*** आउ, आउ, एकदम ठीक समय पर अपने पहुँचि गेलहुँ। हम ओही दूटा बाहुबलीक विचित्र अनुरोधक खिस्सा कहि रहल छी।

ब्रह्मा ई तऽ बड़ विचित्र बात लगैत अछि जे यमदूत बिना मृतात्मा कें लेने घूरि आएल आ अहाँ अपनहि गेलहुँ। आबहु ओ सब आएल की नहि ?

यमराज नहि ने। सएह तऽ खिस्सा कहैत छी आ आवश्यक मंत्रणा करबाक अछि। ओहि दूनू बाहुबलीक अनुरोध छैक जे अपना संग किछु सामान यमलोक लऽ जेबाक अनुमति भेटए। हम स्वयं एकर निर्णय नहि लऽ सकलहुँ तें दौड़ल एलहुँ अपने सबहक दरबार मे। ओहि दूनू कें हम अपन दूतक पहरा मे मर्त्यलोके मे छोड़ि आएल छी।

विष्णु सामान आ मर्त्यलोक सँ यमलोक आनल जाएत ? ई तऽ सत्ते अभूतपूर्व घटना होएत। एकर दूरगामी प्रभावक अध्ययन केने बिना हम सब कोना निर्णय लेब जे अनुमति देल जाए की नहि।

महेश पहिने चित्रगुप्त महराज सँ सूनि लेल जाए हुनकर विचार।

चित्रगुप्त ***(बड़ी काल तक खाता कें उनटबैत पुनटबैत)*** हमरा खाता मे जतेक नियम कानून लिखल छैक से मात्र जीव लेल छैक। निर्जीव सामान लेल कोनो नियम कानून कहियो बनाओले नहि गेलैक।

ब्रह्मा हमरा तऽ एहि मे बेस खतरा बुझा रहल अछि। जेना मुनि नारद सुनौलनि, यदि किछु एहन सामान आबि गेल तऽ फेर देवलोक कें सेहो डर छैक ने।

यमराज ओकरा दूनूक कहब छैक जे मर्त्यलोक सँ सामान पहिनहुँ यमलोक पठाओल गेलैक अछि। विभिन्न कुण्ड सब मे मानव मल मूत्र रक्त मज्जा आदि भरल गेलैक से तऽ ओतहि सँ आनल गेलैक। यमलोक आकि देवलोक मे मानव तऽ छलैक नहि।

विष्णु बात तऽ ठीके कहैत अछि ओ सब। कने नारद मुनिक विचार सेहो सूनि लेल जाओ।

नारद हम जे किछु देखलियै तकरा आधार पर एतबे कहब जे ओकरा सबहक सामान हम सब चीन्हि नहि सकबैक। लाभदायक होएत की हानिकारक से बुझबाक कोनो उपाय देवलोक मे नहि छैक। बूझू अन्हार घर सापे साप।

चित्रगुप्त हमरा सब तऽ "एम्हर इनार आ ओम्हर खाधि" बला स्थिति मे आबि गेल छी। अनुमति नहि देला सँ ओ दूनू बाहुबली मर्त्यलोक सँ टसकत नहि आ अनुमति देला सँ संगें की आनत सेहो अज्ञात अछि।

यमराज किछु निर्णय शीघ्रे लेबऽ पड़त।

महेश हमरा विचारें अनुमति देबा मे कोनो हर्ज नहि। देवलोक नष्ट हेतैक तऽ नीके हेतैक, फेर सँ निर्माण करब। पुरान घर खसए, नव घर उठए ***(डमरू बजबऽ लगैत छथि)***

ब्रह्मा संहारक रुद्र कें तऽ विनाशलीला देखबा मे मजा अबैत छनि। सब गोटे कने सीरियस होउ आ प्रस्ताव पर विचार करू।

विष्णु छोड़ू सब त्वञ्चाहंत आ बतकही। आनऽ दियौ जे आनत से। यदि कोनो विघ्न आओत तऽ अन्त मे भगवती तऽ छथिए सब दुष्टक संहार करबा लेल।

चित्रगुप्त नीक विचार। यदि सब गोटेक सहमति हो तऽ हम खाता मे लीख ली। आगू फेर एहन प्रस्ताव पर बहस करैक काज नहि रहत।

ब्रह्मा लीखू सर्वसम्मति सँ प्रस्ताव पास भेल।

यमराज बहुत नीक, आब हम चलैत छी ***(चित्रगुप्तक संग प्रस्थान)***

महेश चलै चलू, बहुत समय बर्बाद भेल, कनियाँ सब बाट तकैत हेतीह ***(हुनका संग विष्णुक प्रस्थान, ब्रह्मा रुकि जाइत छथि।)***

ब्रह्मा *(नारद कें सम्बोधित करैत)* मुनिश्रेष्ठ, कने एम्हर आउ। *(नारद हुनका लग अबैत छथि, ब्रह्मा हुनका कान मे किछु कहैत छथिन)*

नारद नारायण, नारायण ! देखियौ की कऽ सकैत छी। *(दूनूक प्रस्थान, प्रकाश बन्द)*

अंक 1 दृश्य 7

स्थान मर्त्यलोक मे बाहुबली रमेश आ सुरेशक मृत्युस्थल। मंच सज्जा ओहिना, कुर्सी टेबुल अछिए, मात्र पोस्टर बदलि देल गेल, आब सादा पोस्टर प्रदर्शित अछि। हड़बड़ाएल यमराजक अवतरण। दूनू यमदूत आ दूनू बाहुबली मृतात्मा गाएब छथि।

यमराज सब भागि गेल की ? *(आवाज दैत आ कुर्सी पर बैसैत)* कतए गेलहुँ यौ यमदूत लोकनि ?

(दूनू यमदूत हड़बड़ाएल प्रवेश करैत छथि)

दूनू दूत (*एकहि संग)* एतहि छी धर्मराज। अपने कें काज भऽ गेल ?

यमराज काज भऽ गेल, मुदा अहाँ सब ओहि दूनू मृतात्मा कें कतऽ छोड़ि देलियै ?

(तखने ब्रीफकेस लेने रमेश आ सुरेशक प्रवेश)

रमेश *(ब्रीफकेस रखैत)* एतहि छी धर्मराज।

सुरेश *(ब्रीफकेस रखैत)* हम सब अपनेक संग यमलोक यात्राक लेल तैयार छी।

यमराज आब विलम्ब की? चलैत चलू।

रमेश बस, अन्तिम बेर कने आहे माहे सुना दी, यमलोक मे फेर अवसर नहिए भेटत।

सुरेश अपने हमरा दूनू पर बहुत कृपा केलिऐ धर्मराज, स्वयं आबि गेलियै आ ब्रीफकेस संगें लऽ जेबाक अनुमति सेहो दऽ देलियै, एहि लेल हम सब कोटि जिनगी पर्यन्त अपनेक अनुगृहीत रहब।

रमेश हमरा सबकें ई जानि बहुत दुख होइत अछि सूर्यपुत्र जे धरती पर कतहु कियो भक्तिभाव सँ अपनेक पूजा नहि करैत अछि। अपने सन धर्मात्माक पूजा हेबाके चाही। आन देवताक मन्दिर सब गामे गाम टोले टोल आ अपनेक मन्दिर तकबा लेल गूगल सर्च करए पड़ैत छैक।

यमराज हमरा अपन काज सँ मतलब अछि, पूजा अर्चनाक चिन्ता हमरा नहि अछि।

रमेश ई अपनेक महानता भेल धर्मराज मुदा सोचियौ ई भेदभाव किएक ? अपने यमलोकक एतेक पैघ साम्राज्यक देखभाल करैत छिऐक, अपनेक संग जे चित्रगुप्त रहैत छथि हुनको पूजा लेल वर्ष मे एक दिन निश्चित कएल छनि, तखन मात्र अपने किएक छूटल रहैत छी ? अपनेक पूजा तऽ सब देवताक संग हेबाक चाही सूर्यपुत्र।

सुरेश जरूर एहि मे देवलोकक कोनो चक्रचालि छैक। हम तऽ कहब जे अपने देवता सब कें एक बेर हड़तालक नोटिस पठा दियनु जे यमलोकक सब काज अनिश्चित काल लेल बन्द भऽ जाएत। अपनहि सब लाइन पर आबि जेताह।

यमराज यमलोकक काज बन्द कऽ देबैक ? ई की बाजि रहल छी अहाँ ?

रमेश काज बन्द नहि करबैक, बन्द करबाक धमकीएटा देबाक अछि देव, हमरा विश्वास अछि जे हड़तालक नोटिस भेटला पर देवलोक मे हड़कम्प मचि जेतैक आ सब अपनेक बात मानबा लेल बाध्य भऽ जेताह।

सुरेश हमरा सब कें जे कहबाक छल से कहि देलहुँ देव, यदि किछु अनुचित बजा गेल हो तऽ माफ कऽ देबैक। आब अपने रस्ता देखबियौ, हम सब यात्रा लेल तैयार छी।

रमेश ***(दूनू यमदूत कें सम्बोधित करैत)*** ब्रीफकेस उठा ने लएह, तकैत की छह ?

दर्शक दिस घूमि कए दूनू कोरस मे एकटा समदाओन गबैत छथि जाहि मे अपन कएल समस्त अपराधक लेल जनता सँ माफी मँगैत छथि।

बर रे कुदिन मे जनम हम लेलियै, पढ़ि लीखि भेलियै जवान
चाकरी के फेरा मे नेता के संग धेलियै, बनि गेलियै राकस हेवान
माए बापक सपना समाजक मनोरथ, माटि मे देलियै मिलाए
पापक जड़ि ओहि नेता सबकें मारि कए, लेलियै यम कें बजाए
चलै छी हम यमदेश सब कें कना कए, कएल बहुत संहार
एहन अधम हम माफी कोना मँगबै, करबै अहीं सब विचार, करबै ....

गबैत गबैत दूनू कानए लगैत अछि, पर्दा खसैत छथि, प्रथम अंक समाप्त।

अंक 2 दृश्य 1

मंच सज्जा मे कोनो विशेष अन्तर नहि। एकटा टेबुल आ किछु कुर्सी मंच पर राखल। किछु दृश्य मे छओटा कुर्सीक आवश्यकता। अन्य दृश्य मे कमे। पोस्टर सब ओहिना लगाओल जाएत। पहिल दृश्य मे लागल पोस्टर पर लिखल अछि 'यम दरबार'। एहि पोस्टरक उपयोग पहिनहुँ भेल अछि।

यमराज आसन पर बैसल छथि। बगल मे चित्रगुप्त अपन खाता बही पसारने ओहि मे डूबल छथि। प्रकाश पहिने यमराज पर पड़ैत अछि तखन चित्रगुप्त पर। फेर प्रवेश पथ पर, जतए दूनू यमदूत बाहुबली मृतात्मा रमेश आ सुरेश कें लेने आबि रहल छथि। हुनका दूनूक मंचक बीच पहुँचला पर पूरा मंच आलोकित होइत अछि। दूनूक हाथ मे ब्रीफकेस छनि, से दरबार मे रखैत छथि।

यमराज चित्रगुप्त महराज, इएह दूनू ओ विशिष्ट बाहुबली मृतात्मा छथि रमेश आ सुरेश। हिनकर कर्मक लेखा जोखा देखि लेल जाओ।

रमेश ***(नम्र स्वरें)*** धृष्टता माफ हो महाराज तऽ निवेदन करी। यदि ब्रीफकेस खोलबाक अनुमति भेटैत तऽ अपने सबहक काज आसान भऽ जाइत।

यमराज अहाँ दूनू लेल जखन सब नियम कानून बदलले गेल तखन इहो कइये लिअऽ।

(दूनू नीचा झुकि कए अपन ब्रीफकेस खोलि स्मार्टफोन बहार करैत छथि, ओहि मे लीखल विवरणक फाइल निकालि ओकरा चित्रगुप्त कें दैत)

सुरेश एहि मे अपने कें हमरा दूनूक सबटा पापक रेकॉर्ड भेटि जाएत। हमरा दूनू द्वारा कएल गेल हत्या, अपहरण, बलात्कार, व्यभिचार आदिक विस्तृत विवरण तारीख, साल आ समय सहित लिखल अछि।

रमेश ई विवरण हमरा कम्प्यूटर मे सेहो भेटि जाएत। इंटरनेट आब पूरा ब्रह्माण्ड मे उपलब्ध छैक। यदि एतए कम्प्यूटर उपलब्ध हो तऽ क्षणे मे सब सूचना हाजिर भऽ जाएत।

चित्रगुप्त इंटरनेट आ कम्प्यूटर की होइत छैक ? छोड़ू ई मुरखाहा गपसप। ***(स्मार्टफोनक विवरण कें देखैत आ अपना खाता सँ मिलबैत)*** धर्मराज, विवरण तऽ ठीके नीक सँ लीखल अछि।

यमराज ठीक छैक, एखन तऽ हिनका दूनू कें जल्दी अपन स्थान पठेबाक अछि तकर इन्तजाम होअए।

चित्रगुप्त हिनकर कर्मक फल देखि तऽ लगैत अछि जे छियासियो नरक कुण्ड कम पड़ि जाएत। हिनका दूनू कें सब नरक कुण्डक बास भोगनाइ छनि तें कतहु सँ शुरू कऽ सकैत छी।

यमराज तऽ पहिने अग्निकुण्डे मे जाथु।

रमेश अनुमति हो तऽ एकटा तुच्छ निवेदन करी धर्मराज।

यमराज आब की ? डराइत छी की ?

सुरेश नहि धर्मराज, उखरि मे मुह देलाक बाद मुसराक कोन डर ? यमलोक मे आबि पापी कें यातनाक कोन डर ? डर होइतै तऽ लोक पाप करबे नहि करैत। हमर निवेदन दोसर अछि।

रमेश हमरा दूनू कें स्नान करबाक अनुमति देल जाओ महाराज वैवस्वत।

यमराज ***(तमसाइत)*** पापी नरकभोगी मृतात्मा कें स्नानक कोन काज ? ई कोन नव टाटक ठाढ़ केलहुँ अहाँ सब ?

सुरेश धर्मराज, अपनेक न्याय तीनू लोक मे ख्यात अछि। बुझले होएत जे फाँसिओक सजा भेटल कैदी कें अन्तिम इच्छा पूछल जाइत छैक आ पूरा कएल जाइत छैक।

रमेश ओतबे नहि, ध्यान दियौक देव जे छागड़ो कें बलि देबा सँ पहिने स्नान करा देल जाइत छैक। हमहूँ सब जखन विभिन्न नरक कुण्ड मे हजारो सालक सजा भोगए जा रहल छी तऽ ओहि सँ पहिने एक बेर नीक जकाँ स्नान कऽ लेब उचिते ने हेतैक न्यायराज।

चित्रगुप्त धर्मराज, बहस मे हिनका दूनू सँ जीतब कठिन अछि। अपन चमत्कार तऽ ई सब मर्त्यलोके सँ देखा रहल छथि। तें हमर विचार जे हिनका लेल स्नानक व्यवस्था कइये देल जाए।

सुरेश ***(चित्रगुप्तक पैर पकड़ैत)*** धन्य छी प्रभो। बस एकटा आर विनय जे स्नान खुला मे नहि बन्द कक्ष मे करबाक व्यवस्था हो आ ब्रीफकेस लऽ जेबाक अनुमति सेहो भेटए।

यमराज बन्द कक्षक स्नानघर तऽ मात्र हमरेटा अछि, ताहि मे मृतात्माक प्रवेश सम्भव नहि। ***(दूनू यमदूत कें सम्बोधित करैत)*** जाउ कोनटा बला इनार कें घेरेबाक व्यवस्था करू।

रमेश धर्मराज, नियम मे मामूली ढिलाइ सँ समयक अमूल्य बचत होइत। जतेक काल मे इनार घेरल जाएत ओतेक काल मे तऽ स्नान कऽ कए हम सब किछु घण्टा अग्निकुण्ड मे बासो कऽ लेब। एहि दृष्टिकोण सँ देखल जाओ सूर्यपुत्र।

चित्रगुप्त हमरा लगैत अछि नियम मे ढील देबहि पड़त। जतेक जल्दी हिनका दूनू कें एतए सँ हटाएब ओतेक जल्दी दोसर काज शुरू कऽ सकब। ई सब जतेक काल एतए रहताह, किछु ने किछु टाटक ठाढ़ करितहिं रहताह।

यमराज ***(दूनू यमदूत कें सम्बोधित करैत)*** बेस, चित्रगुप्त महराजक इच्छानुसार हिनका दूनू कें हमरा स्नानघर मे लेने जइयनु। कड़ा पहरा राखब। चिन्हिते छिएनि केहन मायावी छथि। कतहु एम्हर ओम्हर बहरा जेताह तऽ पूरा यमलोक मे हड़कम्प मचि जाएत।

दूनू दूत जे आज्ञा देव। ***(दूनूक ब्रीफकेसक संग दूनू कें स्नानघर दिस लऽ जाइत छथि।)***

चित्रगुप्त हमरा लक्षण किछु नीक नहि लागि रहल अछि। ई सब धरती पर पापो केलक अछि, जतेक जे काज केलक से अनायासे नहि, खूब सोचि विचारि कए केलक, ओकर क्रमबद्ध रेकॉर्ड सेहो तैयार केने अछि जे सत्ते मे हमरा खाता सँ नीके छैक, हरदम विचित्र माँग रखैत अछि जकरा एकदम अनुचितो नहि कहि सकैत छिऐक।

यमराज अपने तऽ ई खेल एखन देखलियैक अछि, हम तऽ कतेक काल सँ देखि रहल छी। एही खेलाक कारण ने हमरा मर्त्यलोक जाए पड़ल आ फेर दौड़ि कए देवलोक आबए पड़ल मंत्रणा लेल। ***(किछु खियाल करैत)*** स्नान मे बहुत देरी लगौलक ई दूनू।

(एतबे मे एक यमदूत दौड़ल अबैत अछि एकदम परेशान भेल)

दूत-एक जुलुम भऽ गेल धर्मराज, ओ दूनू एकहि संग स्नानघर मे प्रवेश कऽ गेल दूनू ब्रीफकेसक संग। एतेक देरी लागि गेलैक मुदा बहराइते नहि अछि। तें अपन संगी कें पहरा पर राखि हम दौड़ल एलहुँ अपने कें सूचित करै लेल।

यमराज चित्रगुप्त महराज, आब की होएत ? एहि मायावी मृतात्माक कोनो ठेकान नहि।

चित्रगुप्त कने देखि लेल जाओ, यमलोक सँ भागत कतए ?

(ताबत पाछू मे दोसर दूतक संग रमेश आ सुरेश आबि कए ठाढ़ भऽ जाइत छथि)

रमेश अपने सबहक समय बचबै लेल एके बेर स्नानघर मे प्रवेश कएल धर्मराज। हम सब तैयार छी, पठाउ जाहि कुण्ड मे आदेश हो।

सुरेश ***(रमेशक हाथ धरैत)*** अग्निकुण्डक आदेश तऽ भइये गेल छैक, चलऽ ने अपनहि पुछैत पुछैत चलि जाएब। बुझले छहु ओतए सौ हाथ उपर धधरा उठैत हेतैक। ***(विदा हेबाक उपक्रम करए लगैत अछि)***

चित्रगुप्त आब अहाँ सब किछु बेसिए हड़बड़ाएल लगैत छी। थम्हू, हमरा खाता मे नाम पता लिखऽ दिअऽ, एतए औंठा छाप दियौक। ई आदेशपत्र लऽ कए दूत लोकनि जेता अहाँक संग, ओतुका अधिकारी कें देथिन, ओ फेर औंठा छाप लेताह मिलबै लेल जे कतहु कोनो मृतात्माक अदलाबदली तऽ ने भऽ गेल। तकर बादे कुण्ड मे खसाओल जाएत।

रमेश दूटा निवेदन स्वीकार करियौ देव - पहिल जे औंठा छाप नहि लऽ कए दस्तखत लेल जाओ, हम सब तऽ उच्च शिक्षाप्राप्त छी। आब मर्त्यलोक मे सब साक्षर भऽ गेल छैक। दोसर जे हमरा दूनू कें कुण्ड मे खसबैक कोनो काज नहि, हम सब अपनहि खुसी खुसी कूदि जेबै ओहि मे।

यमराज दस्तखत तऽ आइ तक कियो करबे नहि केलक, हमरा इहो नहि बूझल अछि जे ओतुका अधिकारी लोकनि कें दस्तखत मिलान करबए अबैत छनि की नहि।

सुरेश अपने सब फोटो लेबाक व्यवस्था किएक ने रखैत छी ? कोनो तरहक झंझट नहि, फोटो देखू, मिलाउ। कोनो अदलाबदलीक सम्भावना नहि।

चित्रगुप्त ***(खिसिया कए)*** ई यमलोक छिऐक, मर्त्यलोक नहि। एतए वैज्ञानिक आविष्कार नहि भऽ रहल छैक, मात्र पापी मृतात्मा कें सजा देल जाइत छैक।

रमेश हम सब नीके लेल कहलहुँ देव, कोनो बात नहि, सुरेश, छोड़ह अपन जिद, दऽ दहक औंठा छाप आ आगू बढ़ऽ। ***(औंठा छाप देबा लेल हाथ बढ़बैत छथि, चित्रगुप्त हुनकर***

औंठा छाप लैत छथि, तकर बाद दोसर कागत पर सुरेशक औंठा छाप सेहो लैत छथि, दूनू कागत दूतद्वय कें दैत)

चित्रगुप्त हिनका दूनू कें सम्हारि कए अग्निकुण्ड तक लेने जइयनु, ओतुका अधिकारी कें सब बात नीक जकाँ बुझाए देबनि नहि तऽ ई दूनू ओतहु कोनो टाटक ठाढ़ करताह।

(दूनू यमदूतक संग रमेश आ सुरेशक प्रस्थान)

यमराज एक उखराहा मे मात्र दूटा मृतात्मा कें निपटाओल। एना जँ स्थिति आगुओ भेल तऽ यमलोकक कार्यालय बन्दे भऽ जाएत।

चित्रगुप्त आब आइ कोनो काज करबाक मोन नहि अछि। जाइ विश्राम करी, अहूँ विश्राम करू धर्मराज।

(दूनू गोटेक प्रस्थान, अंधकार)

अंक 2 दृश्य 2

मंच सज्जा ओहिना, खाली पोस्टर बदलैत अछि। पोस्टर पर लीखल अछि 'चित्रगुप्त आवास'। समय खूब सबेरे, चित्रगुप्त अपना आवास पर चिन्तित मुद्रा मे टहलि रहल छथि। नारद कें समाद पठौने छथिन भेंट करबा लेल। जेना जेना ओ मंच पर घुमैत छथि तेना तेना प्रकाश हुनका मुह पर पड़ैत घुमैत अछि जाहि मे हुनकर चिन्तित मुद्रा नीक जकाँ परिलक्षित होइत अछि।

चित्रगुप्त एखन तक ई नारद बाबा नहि एलाह अछि। हिनकर इएह बड़का बिमारी छनि। जखने काज पड़त तखने कतहु चल जेताह बौआइ लेल। हमर मोन औना रहल अछि मंत्रणा करबा लेल आ हिनकर कतहु पते नहि। ***(नारदक प्रवेश, संगहिं प्रकाश हुनका आलोकित करैत पूरा मंच सेहो आलोकित होइत अछि।)***

नारद नारायण, नारायण ! एतेक सबेरे समाद पठौलहुँ, कहू सब कुशल तऽ अछि ने।

चित्रगुप्त आसन ग्रहण कएल जाओ मुनिश्रेष्ठ ***(कुर्सी आगू बढ़ा दैत छथिन, दूनू गोटे बैसैत छथि)*** हम अपने तऽ कुशले छी, मुदा यमलोकक हालत ठीक नहि बुझा रहल अछि।

नारद आब की भेलैक ?

चित्रगुप्त बुझले होएत ओहि विचित्र मृतात्माद्वयक प्रवेशक खिस्सा जकर माँग छलैक किछु सामान मर्त्यलोक सँ यमलोक अनबाक।

नारद हँ, जाहि लेल परसूए तऽ देवलोकनिक बीच विशेष मंत्रणा भेल छलनि।

चित्रगुप्त ओकरे खिस्सा कहैत छी। ओ दूनू अपना पेटी मे डायरी जकाँ एकटा यंत्र अनने छल जाहि मे अपन सब कुकृत्यक विस्तृत विवरण लिखने छल। आ से एहन नीक ढंग सँ जे ओकरा देखिते हमरा अपना लूरि पर लाज होमए लागल।

नारद *(आश्चर्य प्रकट करैत)* से की ? अपने सन लेखाकार तीनू लोक मे नहि अछि तखन ओहि मर्त्यलोकक अदना जीव एतेक कोना सीखि लेलक ?

चित्रगुप्त हमरहु एकर उत्तर नहि भेटल अछि देवर्षि। एकेटा सम्भावना अछि - युग युग सँ हम सब शिथिलताक शिकार भेल छी। कहलनि ओहि दिन महादेव ठीके जे हम सब मानि बैसल छलियै सब लूरि मे सर्वोत्तम छी आ नव किछु कतहु भैए नहि सकैत छैक। ओही प्राचीन पद्धति कें कनहा पर टँगने हम सब एतए बैसि अपना अभिमान मे डूबल रहलहुँ आ धरती पर ई तेज बुद्धि बला मानव जाति की की ने विकसित कऽ लेलक।

नारद वैज्ञानिक आविष्कारक किछु झाँकी तऽ हम स्वयं देखि आएल छी मुदा लेखाकृति मे सेहो एतेक प्रगति भऽ गेलैक ई नव सूचना भेल। एहि सँ अपने कें चिन्तित हेबाक कोन काज ? ओ हमरा सब कें चैलेंज तऽ नहिए करत।

चित्रगुप्त से बात नहि, मुदा विकसित सभ्यता सँ डर तऽ हेबाके चाही ने देवर्षि। कालि ओहि मृतात्माद्वय लऽ कए कतेको अजगुत बात भेल जे पहिने कहियो नहि देखने छलियैक।

नारद से की ?

चित्रगुप्त पहिने तऽ ओ सब स्नान करबाक अनुमति मँगलक, सेहो बन्द स्नानगृह मे। तर्कों न्यायसंगत आ अकाट्ये छलैक। हमरा तऽ किछु फुराइये ने रहल छल। धर्मराज एकटा इनार कें घेरेबाक प्रस्ताव देलखिन मुदा ओ सब चलाकी सँ हिनक निजी स्नानघरक उपयोग कइए लेलक।

नारद *(बेस आश्चर्यचकित होइत)* मृतात्मा यमलोक मे स्नान केलक सेहो यमराजक निजी स्नानघर मे, ई खबरि देवलोक मे जाएत तऽ जरूर हड़कम्प मचत।

चित्रगुप्त ओतबे नहि, जखन ओकरा दूनू कें बूझल भऽ गेलैक जे पहिने अग्निकुण्डक सजा भोगबाक छैक तखन स्नान केलाक बाद अपनहि विदा भऽ गेल जे पुछैत पुछैत अग्निकुण्ड ताकि लेब। एकदम निडर भावें ओ सब व्यवहार करैत छल एना जे यमलोकक विस्तृत जानकारी रखने हो।

नारद अद्भुत आ आश्चर्यजनक। मर्त्यलोकक जीव कें यमलोकक मामूली जानकारी शास्त्र पुराण सँ भेटि सकैत छैक मुदा कियो एतेक ज्ञानी भऽ जाएत जे पहिल बेर यमलोक मे प्रवेश करत आ बाजत जे अग्निकुण्ड पुछैत पुछैत चल जाएब से अजगुत बुझा रहल अछि। एहि विषय मे हमरा की कहैत छी ?

चित्रगुप्त एखन एतबे बूझि राखू जे दूटा खुरापाती आत्मा यमलोक मे प्रवेश केलक अछि। हमरहु नहि बूझल अछि आगू ई सब की करत।

नारद की देवलोक मे ई खबरि प्रकाशित कएल जाए ?

चित्रगुप्त एखन कथी लए कहबनि, यदि आर किछु नव आ कि अजगुत हेतैक तखन तऽ मंत्रणा करहि पड़त।

नारद बेस, चली तखन, स्नान पूजाक बेर भइये गेलैक।

चित्रगुप्त जरूर, हमरहु आइ जल्दीए दरबार मे जेबाक अछि।

(दूनूक प्रस्थान, प्रकाश बन्द)

अंक 2 दृश्य 3

स्थान यमराजक आवास, समय लुकझुक साँझ। मंच सज्जा मे मात्र पोस्टर बदलैत अछि, कुर्सी टेबुल ओहिना रहैत अछि। पोस्टर पर लीखल अछि 'यमराज आवास'। यमराज किछु चिन्तित मुद्रा मे बैसल छथि। प्रकाश हुनका मुह पर पड़ैत अछि। रमेश आ सुरेश पर्दाक पाछू ठाढ़ होइत छथि जेना अदृश्य भेल होथि आ पर्दाक पाछू सँ बजैत होथि।

रमेश धर्मराज, चिन्तित किएक छी।

यमराज ***(अकचकाइत)*** के बजैत छी ? ***(चारू कात मूरी घुमा कए तकैत छथि)***

सुरेश समय एला पर परिचय भेटि जाएत धर्मराज।

यमराज ***(अकानैत)*** अच्छा, एखन की कहऽ चाहैत छी ?

रमेश धर्मराज कें निवेदन जे मर्त्यलोकक एकटा तुच्छ उपहार स्वीकार कएल जाओ। ***(पर्दाक भीतर सँ एकटा पैकेट घुसका देल जाइछ)।***

यमराज मर्त्यलोकक वस्तु एतए कोना ?

रमेश अपनेक अनुमति सँ आनल गेल छल धर्मराज, एकरो रहस्योद्घाटन यथासमय भैए जाएत।

यमराज ***(पैकेट कें उठबैत)*** एकर की प्रयोजन ?

सुरेश उपयोग केलाक बाद एकर गुण अपनहि बूझि जेबैक महाराज वैवस्वत।

यमराज एकरा की करबाक छैक ?

रमेश एकर उपयोग अपने शयनकक्ष मे करबैक धर्मराज। पैकेट मे देखियौ एकटा टोंटी छैक। राति मे शयन कक्ष मे विश्राम करबा काल पैकेट सँ वस्तु कें बहार कए ओहि टोंटी कें सेहो खोलि देबैक। किछु काल बाद ओ पसरि जेतैक आ किछु बाजऽ लागत। ध्यान सँ सुनबैक आ जेना कहल जाए तहिना करबैक। यदि कोनो तरहक गड़बड़ी लागए तऽ टोंटी कें मुह बन्द कऽ देबैक। ओ वस्तु फेर अपन पुरान अवस्था मे आबि जाएत।

यमराज कोन माया से नहि जानि। ठीक छैक आइ राति एकर प्रयोग कऽ कए देखी। ***(प्रकाश धीरे धीरे मद्धिम होइत अन्हार भऽ जाइत अछि। यमराज मंच सँ हटि जाइत छथि)***

अंक 2 दृश्य 4

मंच सज्जा पूर्ववते। पोस्टर पर यमलोक मे यातनाक किछु दृश्य देखाइत अछि। ई सब गरुड़ पुराण अथवा देवी भागवत पुराण आदि स्रोत सँ लेल जा सकैछ। रमेश आ सुरेशक प्रत्यक्ष रूप मे प्रवेश, मंच पर टहलैत छथि। मंच शनैः शनैः आलोकित होइत अछि।

रमेश ***(दर्शक दिस घूमि कए)*** अपने सब कें आश्चर्य लगैत होएत जे ई दूनू जखन अग्निकुण्ड मे चल गेल तखन फेर एतए कोना हाजिर भऽ गेल। एखन एकरा रहस्ये रहऽ दियौक।

सुरेश उचित समय पर रहस्योद्घाटन कऽ देब। ताबत यमलोकक हालचाल जानि लिअऽ।

रमेश जेना कि हमरा अन्दाज छल, सब कुण्ड पर लगाओल पहरेदार अपना मे मस्त कतहु चौपड़ि, कतहु लूडो कतहु ताश आदि खेलाइत। ककरो ध्यान कुण्ड दिस नहि छलैक। लगैत छल जेना मर्त्यलोक मे अपना देशक अकर्मण्य पुलिस सब कें देखि रहल छी।

सुरेश कुण्ड सबहक हालत की कहू ? लगैए युग युग सँ एकर निरीक्षण नहि भेलैक। सब अधिकारीगण अपना अपना मे मस्त, घमण्ड मे चूर। कहैए लेल ओ सब पापात्मा कें कुण्ड मे पीटैत रहैत छथिन। हम सब ककरो किछु करैत नहि देखलियै। खानापूरी करैक लेल दिन मे एक बेर आ राति मे एक बेर डंडा चला देलनि, कोनो अभागल कें चोट लगलैक, बाँकी सब बाँचि गेल।

रमेश अग्निकुण्ड मे जारनि उसकैनिहार सेहो औंघाइत छल, फल ई जे ओहि कुण्ड मे शुरू शुरू मे जे धधरा एक सौ हाथ उपर उठैत छलैक से एखन कहुना मात्र जड़ि रहल छैक। धधरा उपर किएक उठतैक ?

सुरेश तहिना दोसरो कुण्ड सबके हाल बेहाल। मूत्र कुण्ड आधा सँ बेसी सुखाएल, बिटकुण्ड मे सबटा बिष्टा सुखा गेल, अश्रुकुण्ड, शुक्रकुण्ड, मज्जाकुण्ड सब तहिना मात्र नाम लेल अश्रु, वीर्य आ मज्जा सँ भरल। तैलकुण्ड मात्र सुसुम गरम, तप्त लौहकुण्ड आ ताम्रकुण्डक लोहा, तामा ठंढा भऽ कए ठोस अवस्था मे बदलि गेल।

रमेश अधिकारीगण एहि बात सँ बिल्कुल अनभिज्ञ। ***(स्मार्टफोन बहार कऽ कए लोक कें देखबैत)*** एहि सब दृश्यक फोटो स्मार्टफोन सँ लऽ कए मर्त्यलोक पठा देल गेलैक, जल्दीए अपने सब कें ह्वाट्सएप ग्रुप पर भेटि जाएत। ***(स्मार्टफोन पर एसएमएस एबाक आवाज, चौंकैत अछि, फोन निकालि देखैत अछि)*** मर्त्यलोक सँ मेसेज अछि।

सुरेश की खबरि ?

रमेश ***(पढ़ि)*** खबरि नीक नहि। देखि ले आ बात कें एखन गुप्ते राख।

सुरेश ***(पढ़ि)*** लगैए चुट्टी कें पाँखि भऽ गेलैए।

(प्रकाश शनैः शनैः बन्द होइत अछि, रमेश, सुरेश मंच सँ हटि जाइत छथि)

अंक 2 दृश्य 5

स्थान यमलोक, समय सन्ध्या। मंच सज्जा मे मात्र पोस्टर बदलैत अछि। आब ओहि पर लीखल छैक 'यम दरबार'। एखन दरबार खाली छैक। यमराज मंच पर एम्हर ओम्हर टहलि रहल छथि। प्रकाश हुनका चेहरा कें आलोकित करैत अछि जाहि सँ हुनकर अति प्रसन्न मुद्रा देखाइत अछि।

यमराज ***(स्वतः)*** अद्‌भुत अछि ई मानव जाति। की की आविष्कार केलक अछि आ केहन गुण बला सब जे देवलोकक सब देवी देवता अप्सरा गन्धर्व ओकरा सबहक नोकर नोकरनीओ बनबा जोगर नहि छथिन।

(किछु रुकि कए, एम्हर ओम्हर टहलैत आ देखैत, मूड़ी नीचा झुकौने, प्रकाश हुनका मात्र आलोकित करैत) एकटा छोट डिब्बा मे बन्द वस्तु, की नाम दियैक सेहो नहि बूझल अछि मुदा कतेक लुरिगर ! उर्वशी मेनका रम्भा तऽ कात जाथु, कामदेव प्रिया रतियो कें एतेक लूरि आ अनुभव हेतनि से कहब कठिन। स्वर कतेक मधुर ! अंग संचालन मे केहन चतुर ! लगैत अछि ऋषि वात्स्यायन सबटा ज्ञान एहि पुतरा मे भरि देलखिन। को विहातुं समर्थः ? ककरा ने हेतैक जे हरदम ओकरे सानिद्ध्य मे बैसल रही अथवा छाती सँ लगौने रहियै।

(रमेश आ सुरेशक अदृश्य भेल प्रवेश। जेना पर्दाक पाछू सँ बजैत हो। दूनू कातक प्रवेश पथ पर अदृश्य भेल ठाढ़।)

रमेश बुझाइत अछि धर्मराज मर्त्यलोकक उपहार अपने कें पसिन्न पड़ल।

यमराज ***(चारू कात तकैत आ अकानैत)*** अहाँ के बजैत छी ?

सुरेश कहलहुँ ने धर्मराज, उचित समय पर सबटा बूझि जेबैक। ***(पारम्परिक वेश मे वीणाक संग नारदक प्रवेश, मंच पूरा आलोकित होइत अछि।)***

नारद नारायण, नारायण !

यमराज स्वागत देवर्षि। आउ, आसन ग्रहण कएल जाओ। ***(कुर्सी दिस इशारा करैत, दूनू गोटे बैसैत छथि)***

नारद ककरा सँ गप कऽ रहल छलहुँ धर्मराज ?

यमराज कियो देखा नहि पड़ि रहल अछि मुनिश्रेष्ठ। हमहूँ नहि बूझि रहल छिऐक जे ई आवाज ककर छिऐक, मुदा ई सब परिवर्तन भेलैक ओही दिन सँ जहिया ओ दूनू नटखटिया बाहुबली मृतात्मा एतए आएल।

रमेश ***(नारद कें सम्बोधित करैत)*** बाबा, फेर गेल छलियै मर्त्यलोक दिस?

नारद अहाँ के बजैत छी ? प्रकट किऐक नहि होइत छी?

सुरेश हम सब प्रकट भऽ जाएब तँ अहाँ कें दाँती लागि जाएत यौ बाबा। तें एखन एहिना रहए दियौ। उचित समय पर सब बात बूझि जेबै। एखन हमरा प्रश्नक उत्तर दियऽ।

(नारद चुप्पे रहैत छथि)

रमेश अहाँ की बुझलियै जे चुपचाप आकाश मार्ग सँ जा कए वैज्ञानिक अनुपमक प्रयोगशाला मे आ राष्ट्रीय संग्रहालय मे आगि लगा देबै तऽ ओहि वैज्ञानिकक सबटा कएल धएल नष्ट भऽ जेतैक ? हाय रे बकलेल बाबा !

सुरेश एकटा बात ध्यान राखब बाबा। मानव सभ्यता बहुत विकसित भऽ गेलैक अछि, रामायण महाभारतक जमाना नहि रहलैक। पूरा ब्रह्माण्ड मे बीसो तह मे नुकाएल एकटा बगरो यदि पाँखि हिलेतै तकरो संकेत मर्त्यलोक मे राडार पर देखाइये जेतैक।

रमेश अगिला बेर यदि फेर धरती पर पैर रखबै बाबा तऽ पाछू मे लोक लगा देत डाबा आ दाढ़ी मे किरासन तेल चोपकारि कए जहिना सामा चकेबाक चुगला कें लोक आगि लगबैत छैक तहिना दाढ़ी मे आगि लगा समूचा घुमाओत।

नारद ***(बहुत घबराएल, यमराज कें सम्बोधित करैत)*** वैवस्वत, किछु बूझिए नहि रहल छी जे मर्त्यलोकक घटनाक खबरि यमलोक मे कोना पहुँचि गेलै ? ***(हुनका कान मे किछु कहैत छथि)***

सुरेश बाबा, उत्तर धर्मराज कोना देताह, हमहीं सब देब मुदा एखन नहि, समय एला पर। एखन हम सब जे कहैत छी से दूनू गोटे ध्यान सँ सुनैत जइयौ।

रमेश पुरान जमाना मे जखन एतए नरक कुण्ड सब बनल तखनुक यमलोकक स्थिति आ एखनुक स्थिति मे बहुत अन्तर छैक। सोचियौक जे अग्निकुण्ड मे अनेरे एक सौ हाथ ऊँच धधरा उठैत छैक तकर की प्रयोजन ?

सुरेश कुण्ड मे जे मृतात्मा फेकल जाइत अछि से तऽ चल गेल नीचा। ओतए ओकरा जतेक धधरा आ ताप लगबाक छैक से तऽ लगबे करैत छैक ओहि सँ बेसी यंत्रणा तऽ हेतैक नहि। जे धधरा उपर उठैत छैक ओकर ताप अनेरे नष्ट होइत छैक। प्रदूषण बढ़ैत छैक। ओहि लेल जतेक जारनि खर्चा होइत छैक से निरर्थक।

रमेश जारनि लेल अपने जंगल कटबैत छिऐक जाहि सँ पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ैत छैक। जारनि जड़ैत रहला सँ ब्रह्माण्ड मे ताप बढ़ैत रहतैक जाहि सँ यमलोको प्रभावित हेबे करत।

यमराज एहि दृष्टिकोणे तऽ हम सब कहियो सोचबे नहि केलियैक।

सुरेश सब कुण्डक दशा तहिना अछि। एकटा अछि कुम्भीपाक कुण्ड, तकरा एक लाख मर्द गहींर बना देने छिऐक, भस्मकुण्ड, दग्धकुण्ड डेढ़ हजार मर्द गहींर अछि, बूझू कथी लेल ? सस्ता पैसा आ बेगारक मजदूर छल, खुनबैत गेलियै, खुनबैत गेलियै, कहियो ई नहि सोचलियै जे एकर प्रयोजन की ?

रमेश सब चीजक एकटा उचित डिजाइन होइछै। ओहि अनुसारें बनेला सँ यातना सेहो अधिकतम होइतै आ खर्च सेहो कम। आ रखरखाबक खर्चा आर न्यून रहैत। की यौ नारद बाबा, चुप किएक छी, हम सब अनर्गल गप बजैत छी की ?

नारद *(बहुत मद्धिम स्वरें)* बात तऽ ठीके कहैत छी अहाँ।

सुरेश धर्मराज, अपने सम्भवतः बहुत दिन सँ कुण्ड सबके निरीक्षण नहि केलियैक अछि। सबटा कुण्ड मे यंत्रणा योग्य पदार्थक भारी कमी अछि। आब मर्त्यलोक सँ एहि सामान सबहक आपूर्ति सेहो सम्भव नहिए बूझू।

यमराज *(अकचकाइत)* से किएक ?

रमेश आब पृथ्वी पर राजतन्त्र तऽ रहलैक नहि जे राजाक आज्ञा सँ सब काज हेतैक। ओतए आब जन प्रतिनिधि होइत छथि से अहाँक आज्ञा मानताह कि अपन वोटरक बात सुनथिन। वैज्ञानिक लोकनिक अनुसंधानक फलस्वरूप सब तरहक मल मूत्र, रक्त, मज्जा आदि सँ अति उपयोगी पदार्थ सब बनि रहल छैक। तें जनता ओकरा बाहर पठबए नहि देतैक।

नारद बात तऽ ठीके कहैत छथि।

सुरेश एकटा आर महत्वपूर्ण गप अछि काल सम्बन्धित। अपने सँ बेसी ई बात के बुझतैक धर्मराज जे यमलोकक नियम कानून सतयुग मे लिखल गेल छलैक जखन कियो कियो पातकी होइत छल।

यमराज से तऽ ठीके। जखन विभिन्न लोकक निर्माण भेलैक तखने यमलोक आ देवलोक अस्तित्व मे एलैक। आ सब नियम कानूनो ओही समय लिखल गेल रहैक।

रमेश हमरा सबहक विचारें आब कलियुग मे एहि नियम सब मे आमूलचूल परिवर्तनक आवश्यकता छैक। मर्त्यलोक मे समाज मे बहुत परिवर्तन आबि गेलैक अछि। जकरा सौ साल पहिने समाज गलत काज मानितैक तकरा आइ खुशी खुशी अंगीकार कऽ रहलैक अछि।

सुरेश जखन समाज अपनहि नियम बदलि रहलैक अछि आ देशक संविधान सेहो निरन्तर संशोधित भऽ रहलैक अछि तखन हजारो साल पुरान नियम यमलोक मे किएक चलाओल जाए ?

यमराज बात तऽ अहाँ तर्कसंगत कऽ रहल छी। हम सब जड़ताक शिकार भऽ गेलहुँ तें परिवर्तनक कोनो बात कहियो सोचबे नहि केलियैक।

रमेश महाराज ओदुम्बर, यदि अपने यमलोकक साम्राज्य कें एखनहुँ प्रभावी आ प्रासंगिक बनौने राखए चाहैत छी तऽ ई गुह मूत गिजबाक व्यवसाय छोड़ू। धरती पर आब लोक कें एहि खिस्सा सब सँ भय नहि होइत छैक तें पापीक संख्या मे एतेक वृद्धि भऽ रहलैक अछि।

सुरेश सबटा कुण्ड कें नष्ट कऽ कए एकदम अत्याधुनिक यातना शिविर सब बनाउ जाहि मे वायरलेस शॉक, लेजर ब्लाइन्डिंग, ग्रैविटी टॉर्चर, सोलर फ्राइ आदिक व्यवस्था रहतै।

रमेश एहि काज कें मूर्त रूप देबा लेल अति महत्वपूर्ण अछि जे तत्काल प्रभाव सँ वर्तमान नियम स्थगित कऽ देल जाए। नव संविधान निर्माण लेल कमेटी बनाओल जाए।

सुरेश दोसर जे कलियुगक उत्तरार्ध मे एखन पापीक संख्या मे गुणोत्तर वृद्धि हेतैक से यमलोकक विस्तार हेबाक चाही। यमलोकक विस्तार लेल देवलोक सँ अतिरिक्त जमीन आबंटन कराउ। नव निर्माण मे मर्त्यलोकक आर्किचेक्ट, इंजीनियर सब सँ मदति लेबाक व्यवस्था कराउ। बेस, आब हम सब चलै छी। ***(आवाज बन्द)***

नारद की सोचलियैक वैवस्वत ? हमरा तऽ लगैत अछि ई आवाज झूठ फूसिक धमकी छल।

यमराज किछु फुराइये नहि रहल अछि देवर्षि। हम एकरा धमकी मानै लेल तैयार नहि छी, बात तऽ सटीक कहलक। कालि दुपहरिया मे चित्रगुप्तक संग दरबार आएब मंत्रणा करबा लेल।

(दूनूक प्रस्थान, प्रकाश बन्द)

अंक 2 दृश्य 6

स्थान ब्रह्माक निवास, समय भोर। मंच सज्जा ओहिना, खाली मंच पर लागल पोस्टर मे लिखल अछि 'ब्रह्मा निवास'। ब्रह्मा कुर्सी पर विराजमान छथि। नारद मुनिक प्रवेश। बहुत घबराएल लगैत छथि। मंच आलोकित होइत अछि।

नारद नारायण, नारायण ! प्रजापति कें दंडवत प्रणाम।

ब्रह्मा आएल जाओ देवर्षि, आसन ग्रहण कएल जाओ ***(कुर्सी दिस इशारा करैत, नारद बैसैत छथि)*** एतेक सकाल दर्शन देल से खुशी भेलहुँ। सब कुशल अछि ने ?

नारद नहि चतुरानन, कतहु किछु भारी गड़बड़ लगैत अछि।

ब्रह्मा ***(अकचकाएल)*** से की ?

नारद कालि यमलोक गेल छलहुँ ओहिना उत्सुकतावश जे यमराज कें भेंट करिएनि। सुनले छल दूटा विशेष मृतात्माक खिस्सा जाहि लेल ओहि दिन मंत्रणा भेल छल।

ब्रह्मा हँ, मुदा ओहि लऽ कए अपने किएक चिन्तित छी ?

नारद किछु बुझिए नहि पड़ि रहल अछि प्रजापति। कालि यमराजक दरबार मे जखन हम प्रवेश कएलहुँ तऽ देखल जे ओतए कोनो अदृश्य आत्मा बाजि रहल अछि। ओ जेना दू गोटे छल। ओकरा दूनू कें हमर मर्त्यलोक जेबाक खबरि बूझल छलैक।

ब्रह्मा ***(चौंकैत)*** से की ? ई कोना सम्भव भेलैक ?

नारद ओतबे नहि देव, ओकरा सब कें इहो बूझल छलैक जे हमर काजक कोनो प्रभाव नहि भेलैक। ओ दूनू हमर अपमानो केलक आ बहुत किछु धमकी सेहो देलक। आ यमराज कें तऽ एतेक बात कहलकनि जेना ओएह दूनू यमलोकक शासक होए आ यमराज ओकर चाकर।

ब्रह्मा ***(चिन्तित होइत)*** किछु बुझिए नहि रहल छी।

नारद हमरो दशा तेहने अछि देव। मुदा एतेक जरूर जे ओ सब जाहि तर्कें बाजि रहल छल से सब ओहिना नकारल नहि जा सकैत छलैक। ओकरा तर्क मे औचित्य छलैक आ सब बात मर्त्यलोकक आधुनिक वैज्ञानिक विकासक अनुभव सँ प्रेरित छलैक।

ब्रह्मा मुदा ओ छल के ? यमलोक मे कोनो आत्मा यमराज कें आदेश देतनि ई कोना सम्भव ?

नारद कोना कहू देव ? चिन्ताक बात जे हमरा प्रयासक कोनो फल सेहो नहि भेल। आइ दुपहरिया मे यमराज दरबार एबे करता जरूरी मंत्रणा लेल।

ब्रह्मा ***(चिंतित स्वरें)*** ठीक छैक, दुपहरिया मे अहूँ आउ, यमराजक एला सँ पूर्व हम सब किछु विचार विमर्श करब।

नारद जे विचार, एखन चलैत छी। ***(प्रणाम करैत विदा हेबाक उपक्रम)***

(ब्रह्मा वेश चिन्तित, प्रकाश हुनका पर फ्रीज होइत अछि, फेर शनैः शनैः बन्द होइत अछि, मंच खाली)

अंक 2 दृश्य 7

स्थान देवलोक, मंच सज्जा ओहिना, कुर्सी टेबुल लागल। पोस्टर पर लिखल अछि 'विष्णु दरबार', तीनू देव बैसल छथि। नारद सेहो उपस्थित छथि। प्रकाश क्रम सँ चारू कें आलोकित करैत अछि। तखन धीरे धीरे पूरा मंच आलोकित होइत अछि।

ब्रह्मा देवलोकनि ध्यान सँ सूनल जाओ। पछिला किछु दिन मे नारद मुनिक अनुभव सँ पता चलैत अछि जे देवलोक मे बड़का भूचाल आबऽ बला अछि।

विष्णु कोन नव बात भेलैक जे एहन आभास अहाँ कें भऽ रहल अछि प्रजापति ?

ब्रह्मा मुनिश्रेष्ठक मुहे सुनि लेल जाओ चक्रपाणि।

नारद देव लोकनि, मोन हेबे करत किछु दिन पूर्व यमराज दूटा मृतात्माक सम्बन्ध मे एकटा विचित्र प्रस्ताव अनने छलाह। हम सब ओहि मृतात्मा कें मर्त्यलोक सँ किछु सामान अनबाक स्वीकृति दऽ देने छलियै।

महेश हँ, ओ प्रस्ताव तऽ सर्वसम्मति सँ पास भेल छलैक।

नारद ठीक, मुदा जेना हम कहने छलहुँ, ओहि सामान कें हम सब चीन्हि नहि सकबैक। ओहि मे की छलैक आ ओकर देवलोक पर की प्रभाव हेतैक से एखनहुँ हम नहि बुझैत छी मुदा किछु अप्रत्याशित घटना घटि रहल अछि जरूर।

विष्णु कने फरिछा कए कहू।

नारद ओहि मृतात्माक एलाक बाद ओकरा सब कें अग्निकुण्ड पठा देल गेलैक। मुदा ताहि सँ पहिने ओ सब बन्द घर मे स्नान केलक। फल की भेलैक से नहि जानि मुदा कालि यमलोक मे हम देखल यमराज कें कोनो दूटा अदृश्य मृतात्मा धमका रहल छनि।

ब्रह्मा	ओ देवर्षि कें सेहो चिन्हैत छलनि। हिनको किछु डरा धमका देलकनि अछि।

विष्णु	की मानव सत्ते देवलोकक विजय अभियानक तैयारी कऽ रहल अछि ? ***(महेश दू बेर डमरू बजा दैत छथि, जेना कोनो युद्धक बिगुल होए)***

नारद	तेहन सन तऽ नहि लगैत अछि। देवलोक ओकरा सब लेल कोनो चैलेंज नहि छैक। ओ सब तऽ ब्रह्माण्डक अन्यान्य ग्रह नक्षत्र पर पहुँचिए गेल अछि। आ अन्य ब्रह्माण्ड पर जेबाक तैयारी मे लागल अछि।

ब्रह्मा	हमर तऽ विचार होइत अछि जे भगवती दुर्गा कें आह्वान कएल जाए आ मानव जातिक नाश कएल जाए। ई विचार हम बहुत कष्टें देल अछि कारण बुझले अछि मानव हमर अन्यतम सृजन अछि आ हमरा सबसँ बेसी प्रिय।

महेश	चतुरानन, सत्ते अहाँ सठिया गेलहुँ अछि। मानव सँ अराड़ि लेब तऽ पूजा के करत? हम अहाँक पूजा करब आ अहाँ हमर तै सँ चुलहा कोना पजरत ? छप्पन प्रकारक भोगक आदति जे लागि गेल अछि से कतऽ सँ आओत ? देवलोकक छहरमहर दुइये दिन मे खतम भऽ जाएत आ तकर बाद ठनठनगोपाल।

नारद	हमर कहब दोसर अछि। कोनो अभियान सँ पूर्व शत्रुक सबटा सैन्यशक्तिक पता लगा लेबाक चाही।

विष्णु	से तऽ ठीके। दोसर बात जे देवी महिषमर्दिनी कतोक युग सँ युद्ध मे नहि गेलीह अछि। हुनको अस्त्र शस्त्र आब बिझा गेल हेतनि।

(चित्रगुप्तक संग यमराजक प्रवेश)

यमराज	त्रिमूर्ति कें हमर दंडवत प्रणाम स्वीकार हो।

विष्णु	अबैत जाउ, आसन ग्रहण करैत जाउ ***(कुर्सी दिस इशारा करैत, यमराज, चित्रगुप्त दूनू कातक कुर्सी पर बैसैत छथि, चित्रगुप्त अपन खाताबही टेबुल पर रखैत छथि)*** कहल जाए धर्मराज, कोन विशेष प्रयोजन सँ एखन उपस्थित भेलहुँ ?

यमराज	विशेष प्रयोजन भेल यमलोकक शिथिल होइत प्रशासन।

ब्रह्मा	धर्मराज सन न्यायप्रिय शासक आ चित्रगुप्त सन लेखाकारक अछैत ई शिथिलताक चर्चा किएक ?

यमराज	प्रशासन मे शिथिलता आबि रहल अछि चतुरानन कारण युग परिवर्तनक संग हमरा लोकनिक न्याय व्यवस्था परिवर्तित नहि भेल। हम सब कलियुगक उत्तरार्द्ध मे आबि गेल छी आ व्यवस्था सतयुगे बला रखने छी।

महेश	***(डमरू बजबैत)*** एकदम ठीक, हम तऽ कहब जे व्यवस्था शीघ्र बदलब परम आवश्यक।

यमराज	दूटा बात पर ध्यान देल जाओ प्रभो - एक तऽ भेल यमलोकक आकार। यमलोक कें जे जमीन आबंटन भेल से सतयुग मे। ओहि समय पातकीक संख्या न्यून छल। तें यमलोक कें कम हिस्सा भेटलैक।

ब्रह्मा ई तऽ ठीक मुदा आब एहि मे कोना संशोधन सम्भव छैक ?

यमराज आजुक तारीख मे यमलोक मे आबऽ बलाक संख्या हजारो गुणा बढ़ि गेल अछि, संगहिं पापक जे परिभाषा हम सब रखने छी ताहि अनुसार ओकरा सबकें यमलोक मे बहुत दिन तक रहए पड़ैत छैक। फल ई भेलैक जे यमलोक मे सब कुण्ड मे मृतात्मा सब ठूसल रहैत अछि। बहराइत अछि एकटा आ आबि जाइत अछि दशटा।

चित्रगुप्त धर्मराज ठीके कहैत छथि। हमरहु एहि स्थिति लऽ कए बेस चिन्ता रहैत अछि।

विष्णु अपनेक की सुझाव ?

महेश हमर तऽ विचार जे देव लोकनिक लेल एक एक बीघा जमीन राखि देवलोकक बाँकी सबटा जमीन यमलोक कें दऽ देल जाए।

यमराज भोलेनाथ तऽ सब दिन क्रान्तिकारी प्रस्ताव दैत रहलखिन। मुदा हमरा ओतेक नहि चाही। अपने सब कष्ट मे रहब से हमरा कोना नीक लागत ? हम कोना कैलास पर्वत आ क्षीर सागर पर कब्जा जमाउ ? तहिना सब देव अपन फैल आवास राखथु। सुविधानुसार जे बचए से यमलोकक नाम आबंटन कऽ दियौक।

ब्रह्मा मुदा एहि मे एकटा पैघ समस्या छैक - देवलोकक जमीन यमलोक कें दइयो देल जेतैक तऽ कोनो मृतात्मा ओहि भूभाग पर पैर कोना देत ? ई तऽ नियमक विरुद्ध हेतैक।

महेश तें ने हम कहैत छी पहिने नियम कें बदलू।

विष्णु ओहि भूखंड कें यमलोकक भाग घोषित कऽ देला पर मृतात्मा सब रहि सकताह मुदा कतेक जमीन चाही ?

यमराज जतेक बिन काजक जमीन हो यथा बंजर, बलुआह, चट्टान, चऽर चांचर, सघन जंगल आदि जकर देवलोक मे कोनो उपयोग नहि छैक।

महेश हमरा तऽ ई प्रस्ताव अति उत्तम लागल। जखन ओ सब अनुपयोगी जमीन लेबा लेल तैयार छथि तखन हर्जे की ?

विष्णु हमरा ई प्रस्ताव मंजूर अछि।

ब्रह्मा अनुपयोगी जमीन लेल हमरो स्वीकृतिए बूझल जाओ।

यमराज बहुत कृपा केलिऐ देव लोकनि। ई समस्या एतेक सुगमता सँ निपटि जाएत से हमरा अन्दाज नहि छल। आब हमर दोसर प्रस्ताव सुनू।

विष्णु कहियौ, हम सब तऽ बैसले छी ओही लेल।

यमराज जहिना जमीन आबंटन सतयुग मे भेला सन्ताँ कलियुग अबैत अबैत असंतुलन भऽ गेलैक तहिना पाप आ धर्मक परिभाषा सेहो प्राचीन भऽ गेलैक। पृथ्वी पर मानव समाज मे बहुत परिवर्तन एलैक। राजा, जकरा लोक इन्द्रक अवतार बुझैत छल, से सबतरि हटि गेलाह। लोक अपन शासन चलेबा लेल प्रतिनिधि सब चुनलक।

ब्रह्मा मुदा कर्म तऽ ओएह करैत रहल, हत्या, बलात्कार सब समय पाप रहबे करतैक।

यमराज पुरान व्यवस्था मे यमलोक मे जे विभिन्न कुण्डक विधान छल ताहि हिसाबें नवका कुण्ड सब जे बनाओल जाएत ताहि लेल सामान सब कतए सँ आओत ? सूनल अछि जे मर्त्यलोक मे वैज्ञानिक लोकनि नव नव अनुसंधान द्वारा मल मूत्र आदि सँ बहुत उपयोगी पदार्थ बना रहलाह अछि तें यमलोक कें ओकर बिक्री आब नहि होएत।

नारद धर्मराज ठीके कहैत छथि। ओतबे नहि मनुष्य एहन आविष्कार केलक अछि जे अपन प्रतिरूप एतए पठा देत जकरा पर शीत, ताप, गंदगी आदिक कोनो असरे नहि हेतैक।

महेश देखू, हम पहिनहुँ कहने छलहुँ, आइयो कहैत छी जे देवलोक मे जड़ता आबि गेल छैक। परिवर्तन सृष्टिक नियम छिऐक। जहिना ठाढ़ जल शनैः शनैः दूषित भऽ जाइत छैक तहिना नियम कानून सेहो बेसी पुरान भेला पर बेकार भऽ जाइत छैक।

नारद मर्त्यलोक मे तऽ संविधान संशोधन चलिते रहैत छैक।

विष्णु बात बुझलहुँ, एहू दिशा मे कार्य हेबाक चाही।

महेश हम तऽ कहब जे वर्तमान विधान कें तत्काल प्रभाव सँ स्थगित कऽ देल जाओ, नव विधान बनेबा लेल गणेश अथवा कार्तिकक अध्यक्षता आ चित्रगुप्त महराजक सचिवत्व मे एकटा कमेटी बनए जे बेसी सँ बेसी एक बर्ख मे नव नियमक संग संविधान प्रस्तुत करथि। धर्मराज अपने विशेष सलाहकार रहता।

नारद नव विधान लेल की स्वर्ग मे विराजमान पुरान विधि विशेषज्ञ सबहक सेवा नहि लेल जा सकैत अछि ?

ब्रह्मा जेना कि ?

नारद गाँधी, राजेन्द्र प्रसाद, अंबेदकर सन विधिवेत्ता सब जे छथि।

महेश जरूर जरूर, ओहने व्यक्ति सब सँ नव विधान वास्तव मे नव होएत। मात्र नव कलेवर नहि, नव आत्मा सेहो। हम तऽ कहब जे एकाध वैज्ञानिक कें सेहो राखि लेल जाए जे मर्त्यलोक मे भेल वैज्ञानिक विकास सँ परिचित होथि।

विष्णु ठीके कहलहुँ। वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु महोदय बैसले रहैत छथि।

चित्रगुप्त पुरना नियम स्थगित रहबाक अवधि मे यमलोकक प्रशासन कोना चलए ?

महेश हमरा विचारें धर्मराज कें विशेषाधिकार देल जाए, ओ स्वयं निर्णय लेथि जे कोन हिसाबें मृतात्मा सब कें रखताह आ कि छुट्टी दऽ देथिन।

विष्णु बेस, इहो प्रस्ताव पासे बूझल जाओ। दू तीन दिन मे सब सदस्य लोकनि सँ सहमति लऽ कए नव कमेटीक घोषणा कऽ देल जाएत। धर्मराज अपन विशेषाधिकार एखनहि सँ प्रयोग करथु। आर किछु ?

यमराज नहि देव, हमर सब समस्याक समाधान भऽ गेल।

विष्णु बेस तऽ आब सर्वे स्वस्थानं गच्छन्तु। ***(सबहक प्रस्थान, प्रकाश बन्द)***

अंक 2 दृश्य 8

स्थान यमराजक दरबार, मंच सज्जा मे कोनो परिवर्तन नहि, मात्र पोस्टर बदलि देल गेल जाहि मे आब 'यम दरबार' लीखल छैक। दरबार मे यमराज आ चित्रगुप्त उपस्थित छथि। मंच आलोकित होइत अछि।

यमराज — कालि दरबार मे भेल निर्णय यमलोक आ देवलोकक इतिहास मे अभूतपूर्व रहल महालेखाकार। हमर विचार अछि जे अपन विशेषाधिकारक प्रयोग करैत सबटा मृतात्माक नरक भोग शेष कऽ दी आ हुनका लोकनि कें आगूक योनि मे पठेबाक आदेश दऽ दी। आब एक साल तक कोनो नव मृतात्मा कें यमलोक अबैक काजे नहि, सोझे अगिला जन्म मे चलि जेताह। यमलोक खाली भऽ जाएत।

चित्रगुप्त — अति सुन्दर विचार, हमरो काज किछु हल्लुक होएत धर्मराज। ओना हमरा फेर नव विधान बनेबा लेल व्यस्त रहहिं पड़त मुदा ओ नव अनुभव होएत तें ओहि कार्यक प्रति हम बहुत उत्सुक छी।

यमराज — हम अपनेक सफलताक कामना करैत छी देव।

(रमेश आ सुरेशक प्रत्यक्ष रूप मे प्रवेश, दूनू यमराज आ चित्रगुप्त कें प्रणाम करैत छथि)

चित्रगुप्त — ***(दूनू कें देखि आश्चर्यचकित होइत)*** हिनका दूनू कें तऽ अग्निकुण्ड पठा देल गेल छल, फेर एतए कोना ? की हिनका सब कें छुट्टी भेटि गेलनि धर्मराज ?

यमराज — छुट्टी हम तऽ नहि देलिएनि, एखन घोषणा भेलैक कहाँ ? ई तऽ कोनो माया लगैत अछि।

रमेश — माया तऽ राक्षस करैत अछि देव। मर्त्यलोकक मानव मात्र वैज्ञानिक अनुसंधान करैत अछि। समय आबि गेलैक जे सबटा रहस्योद्घाटन कऽ दी।

सुरेश — नव आविष्कारक लूरि सँ हम दूनू अपन साइबोर्ग प्रतिरूप तैयार कएल। स्नानघर मे गेलाक बहन्ने हम सब ओहि प्रतिरूप कें बहार कऽ देल जे एखनहुँ अग्निकुण्ड मे पड़ल अछि देव। तकरा बाद एकटा अदृश्य पोशाक पहिरि हम दूनू बहरेलहुँ आ पूरा यमलोक मे घुमैत रहलहुँ।

सुरेश — बेर कुबेर जे अपने अदृश्य आवाज सुनलियै देव से हमरे दूनूक छल। अदृश्य पोशाक सेहो मर्त्यलोकक वैज्ञानिक आविष्कारे छैक देव।

यमराज — अच्छा तऽ एही लेल ओ पेटी संग लेने एलियै अहाँ सब ?

रमेश — ठीके बुझलियै धर्मराज। आब सब बात स्पष्ट भऽ गेल ने देव ?

यमराज — हँ, बहुत नीक। खुशीक बात जे अन्त मे एहि नाटक सँ यमलोक मे सुधार करबाक काज शुरू भऽ सकल।

चित्रगुप्त — उचित समय पर रहस्यक सब बात फरिछा गेल से बहुत नीक बात। हम देवर्षि नारद कें सेहो बुझा देबनि।

रमेश महाराज वैवस्वत, हमर निवेदन जे अपन विशेषाधिकारक प्रयोग करैत हमरा दूनू कें मर्त्यलोक आपस पठा देल जाए आ हमर जे प्रतिरूप अछि तकरा एतहि अपना सेवा मे लगा देल जाओ। हमरा सब कें यमलोकक नवनिर्माण करबाक अछि धर्मराज।

सुरेश एकदम मॉडर्न क्न्सट्रक्सन महाराज औदुम्बर, जाहि लेल मर्त्यलोक सँ नवका मसीन सब आनए पड़त, विशेष वस्तु सब आनऽ पड़त, रोबोट मजदूर पठबए पड़त। एतए हमर प्रतिरूप सबटा कार्यसंचालन देखत आ मर्त्यलोक सँ सामान सप्लाइक व्यवस्था हम दूनू देखबैक।

यमराज एवमस्तु।

रमेश एकटा आर सुझावक धृष्टता करैत छी देव, यदि अनुमति हो तऽ कही।

यमराज जरूर कहू।

सुरेश नव संविधान बनेबा सँ पहिने चित्रगुप्त महराज कम्प्यूटर सीखि लेथि तऽ उत्तम होइत। कम्प्युटर हम पठा देब, हमर प्रतिरूप हुनका एतहि सब किछु सिखा देतनि।

रमेश हमरा सबहिक अभिलाषा अछि जे नवका यमलोक अत्याधुनिक तकनीकक प्रदर्शनी स्थल बनए।

चित्रगुप्त अभिलाषा जरूर पूर होएत।

रमेश, सुरेश आब हमरा दूनू कें आदेश भेटए देव। ***(दूनू कें प्रणाम करैत छथि, प्रस्थान)***

यमराज कतए सँ कतए हम सब पहुँचि गेलहुँ। धन्य कही मानव जातिक वैज्ञानिक विकास कें।

चित्रगुप्त यमलोक आधुनिक बनि जाएत से तऽ सत्ते बहुत नीक बात भेल सूर्यपुत्र। देवलोक ओहिना रहि जाएत, हमसब बिनु बुझने अगुआ गेलहुँ। आब चलल जाए।

(दूनूक प्रस्थान, प्रकाश बन्द)

अंक 2 दृश्य 9

स्थान यमलोक, समय तत्काल बाद, मंच सज्जा मे एकेटा परिवर्तन। प्रदर्शित पोस्टर आब ओएह अछि जाहि मे यमलोकक दृश्य सब बनल छैक। रमेश आ सुरेशक प्रकट रूपें प्रवेश। पहिने प्रकाश हुनका दूनू कें आलोकित करैत अछि। दूनू विजय मुद्रा मे, अति प्रसन्न छथि। हाथ सँ V चिन्हक प्रदर्शन करैत छथि। मंच आलोकित होइत अछि। दूनू दर्शक दिस मंच पर आगू आबि जाइत छथि।

रमेश ***(दर्शक कें सम्बोधित करैत)*** अपने सब बुझिए गेलियैक जे हमरा दूनूक एहि विशेष अभियानक उद्येश्य छल नरक विजय। अभियान सफल भेल। आब नरक मे कोनो मृतात्मा नहि रहताह आ ने एखन कियो ओतए जेताह। हम दूनू गोटे धरती पर घुरि रहल छी। ई विज्ञानक चमत्कारे छल जाहि सँ हम सब यमलोक मे सुधार करबा सकलहुँ।

सुरेश वैज्ञानिक अनुपम अमितक सहयोग सँ हम दूनू साइबोर्ग प्रतिरूप बनौनाइ आ रोबोट एसेम्ब्ली सीखल। हुनके प्रयासें अदृश्य होइबला कपड़ा लेल। यमराज कें जे घूस देलिएनि से रोबोट अप्सरा छल। बाँकी बात तऽ अपने सब सुनिये लेलियै।

रमेश देवलोक सँ काटि छाँटि कए यमलोक कें बहुत रास नवका जमीन भेटलैक अछि। सबटा पुरना यातनाकुण्ड सब नष्ट कऽ कए रोबोट मजदूर द्वारा पूरा यमलोकक नवनिर्माण हेतैक। ताहि लेल मर्त्यलोक सँ मसीन आ सामान सप्लाइ कएल जेतैक।

रमेश ओकरे निर्यात कम्पनी हम सब खोलबैक। बेस पैघ व्यवसाय छैक, बहुत लोक कें नोकरी भेटतैक। मुदा ध्यान राखब, आब एहि मे कोनो बेइमानीक काज नहि हेतैक ने कोनो राजनेता कें हिस्सा देल जेतनि। हम सब आब कोनो नवका पापक भागी नहि बनब। हमरा दूनूक पुनर्जन्म भेल अछि।

सुरेश पाप पुण्यक नव व्याख्या हेतु एकटा संविधान सभा बनाओल गेलैक अछि जाहि मे चित्रगुप्त सचिव रहताह आ स्वर्गलोक मे बैसल एतुका भूतपूर्व विधिवेत्ता आ वैज्ञानिक सबके सेवा सेहो लेल जाएत। नवका विधान बनबाक अवधि मे यमलोक मे ताला लगा देल गेलैक अछि।

रमेश नवका विधान बनलाक बाद मर्त्यलोक मे पंडितगण सबटा शास्त्र पुराण फेर सँ लिखताह। एहि मध्य एखनुक पोथा सब कें कोन कान दोग दाग सँ ताकि कए जमा करथु आ जरबैक व्यवस्था करैत जाथु। अगिला वर्ष होलिका दहन दिन ई काज कएल जाएत। जय विज्ञान।

पटाक्षेप